प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

अध्याय
तीन

राजा और उसका राज्य

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमारा लक्ष्य संसारभर के हजारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसारभर के सैंकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय 1
राजत्व 2
 परमेश्वर का राजत्व 2
 मसीह का राजत्व 7
कृपा 9
 पुराना नियम 11
 नया नियम 14
  मसीह की विजय 14
  पवित्र आत्मा की सामर्थ्य 15
 प्रकाशितवाक्य की पुस्तक 17
विश्वासयोग्यता 20
 स्थिरता 21
 आराधना 25
  अतीत का छुटकारा 26
  वर्तमान का सम्मान 27
  भविष्य की आशीषें 30
परिणाम 32
 अंतिम श्राप 33
 अंतिम आशीषें 35
  सृष्टि का नवीनीकरण 35
  विश्वव्यापी मंदिर 39
  अनंत राज्य 40
उपसंहार 41

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

अध्याय तीन

राजा और उसका राज्य

परिचय

यीशु के पकड़वाए जाने के बाद, उसे पिन्तुस पिलातुस के सामने लाया गया, और पिलातुस ने उससे पूछा कि क्या वह यहूदियों का राजा है। यीशु ने इस प्रश्न का उत्तर सीधे-सीधे नहीं दिया। इसकी अपेक्षा उसने यह कहा, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं है . . . मेरा राज्य यहाँ का नहीं है।" अब पिलातुस कैसर को जानता था और उसने उसके महल को देखा था। उसे अच्छी तरह से मालूम था कि एक राजा कैसा दिखाई देता है। और यह व्यक्ति जो उसके सामने खड़ा था किसी भी तरह से राजा जैसा नहीं था। कल्पना करें कि यीशु के शब्द उसके लिए कितने अविश्वसनीय रहे होंगे।

शायद आज के समय के अविश्वासी भी यह प्रश्न पूछते हों कि क्या यीशु वास्तव में एक राजा है भी या नहीं। आखिरकार, यदि हम अपने चारों ओर देखें, तो पूरे संसार में परमेश्वर के राज्य के विरोध को आसानी से देखा जा सकता है। परंतु यीशु का पिलातुस को दिया उत्तर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का एक सबसे महत्वपूर्ण विषय है। यीशु वास्तव में एक राजा के समान राज्य करता है, परंतु उसका राज्य इस संसार का नहीं है। और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें यह आशा देती है कि उसका राज्य आने वाला है। हम इसका अनुभव अभी आंशिक रूप से कर सकते हैं, परंतु हम इसका अनुभव पूरी तरह से तब करेंगे जब मसीह वापस आएगा। और क्योंकि इस संसार में अंतिम विजय मसीह की होगी, इसलिए यीशु हमें उसके पुनरागमन तक उससे प्रेम करने और उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए बुलाता है।

यह *प्रकाशितवाक्य की पुस्तक* की हमारी श्रृंखला का तीसरा अध्याय है और हमने इसका शीर्षक "राजा और उसका राज्य" दिया है। यह अध्याय इस बात की खोज करेगा कि कैसे परमेश्वर के राज्य का केंद्रीय विषय पूरी प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में पाया जाता है और इसकी सभी विभिन्न शिक्षाओं को आपस में जोड़ता है।

पहले के एक अध्याय में, हमने कहा था कि परमेश्वर अपने शासन में ऐसे राज्य करता है जो प्राचीन अंतर्राष्ट्रीय संधियों के सदृश है, विशेषकर वे जो महान सम्राटों या सुजरेन और उनकी सेवा करनेवाले वासल राज्यों के बीच होती थीं। हमने इन संधियों या वाचाओं की तीन विशेषताओं को भी दर्शाया था जो परमेश्वर के अपने लोगों के साथ संबंध में भी पाई जाती हैं : अपने वासल के प्रति सुजरेन की कृपा अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की कृपा के समानांतर है। जो विश्वासयोग्यता या आज्ञाकारिता सुजरेन अपने वासल से चाहता था वह उसी विश्वासयोग्यता के समानांतर है जो परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है। और वासल के परिणाम जो वासल की विश्वासयोग्यता या विश्वासघात से निकलेंगे वे उन आशीषों और श्रापों के समानांतर हैं जो परमेश्वर अपने विश्वासयोग्य और अविश्वासयोग्य लोगों को क्रमशः देता है। वाचा की ये तीनों विशेषताएँ प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में मुख्य रूप से पाए जाती हैं।

"राजा और उसका राज्य" पर आधारित हमारा अध्याय चार भागों में बांटा गया है जो कि मोटे तौर पर इन प्राचीन वाचाओं के बुनियादी स्वरूप का अनुसरण करते हैं। पहला, हम उस राजत्व पर ध्यान देंगे जो परमेश्वर एक ईश्वरीय सुजरेन या सम्राट के रूप में रखता है, और साथ ही साथ उस राजत्व पर भी जिसे यीशु परमेश्वर के वासल राजा के रूप में रखता है। दूसरा, हम यह खोज करेंगे कि प्रकाशितवाक्य अपने वाचाई लोगों के प्रति परमेश्वर की कृपा को कैसे प्रकट करता है। तीसरा, हम विश्वासयोग्यता की उस शर्त को देखेंगे जिसकी मांग परमेश्वर अपने लोगों से करता है। और चौथा, हम उन परिणामों की ओर मुड़ेंगे जो परमेश्वर के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्रति विश्वासयोग्यता और अविश्वासयोग्यता के फलस्वरूप निकलते हैं। इसलिए आइए ईश्वरीय सुजरेन के रूप में परमेश्वर के राजत्व और उसके वासल के रूप में यीशु के साथ आरंभ करें।

राजत्व

परमेश्वर और यीशु के राजत्व पर हमारी चर्चा दो विषयों पर केंद्रित होगी है। पहला, हम सारी सृष्टि पर सुजरेन के रूप में परमेश्वर के राजत्व का सर्वेक्षण करेंगे। और दूसरा, हम परमेश्वर के वासल या सेवक राजा के रूप में मसीह के राजत्व का वर्णन करेंगे। आइए परमेश्वर के राजत्व को देखने के द्वारा आरंभ करें।

परमेश्वर का राजत्व

पवित्रशास्त्र के बहुत से भाग, जैसे भजन 113:19, परमेश्वर का वर्णन संपूर्ण सृष्टि पर सर्वसामर्थी राजा और शासक के रूप में करते हैं। उसके पास अपने द्वारा बनाई गई हर वस्तु पर पूरा सामर्थ्य और अधिकार है। और वह ब्रह्मांड और उसके सारे प्राणियों पर शासन करने के द्वारा अपने उस सामर्थ्य और अधिकार को कार्य में लाता है।

> परमेश्वर के पास सारी सृष्टि पर शासन करने का अधिकार है क्योंकि वह सृष्टिकर्ता है। उसने इसकी रचना की है। यह सृष्टि उसकी है, और परमेश्वर के पास इस पर शासन करने का अधिकार है। और भजन संहिता में एक अनुच्छेद है — भजन संहिता 24:1-2 — जो इस बात को बिल्कुल स्पष्ट कर देता है कि यह सत्य है : "पृथ्वी और जो कुछ उस में है यहोवा ही का है, जगत और उस में निवास करनेवाले भी। क्योंकि उसी ने उसकी नींव समुद्रों के ऊपर दृढ़ करके रखी, और महानदों के ऊपर स्थिर किया है।" अतः वह इसका स्वामी है। वह इस पर शासन करता है क्योंकि उसने इसे बनाया है। यह उसकी है।
>
> **डॉ. रॉबर्ट बी. चिज्म, जूनियर**

> परमेश्वर अपने अधिकार को स्वयं के बाहर से प्राप्त नहीं करता है। वह उसका अपना अधिकार है। उसकी विशेषताएँ, सब की सब, आधिकारिक हैं। परंतु निश्चित रूप से, यह उस तरह का अधिकार नहीं है जैसा कि हम मनुष्यों के रूप में देखते हैं, जो अत्याचारी, या द्वेषपूर्ण, या मनमाना हो सकता है। यह अधिकार अच्छा है क्योंकि परमेश्वर अच्छा है। परंतु हम उसके अधिकार पर भरोसा कर सकते हैं क्योंकि उसके पास एक अद्भुत ट्रैक रिकॉर्ड है। निश्चित रूप से, उसके अधिकार का सबसे बड़ा प्रमाण हमारे पापों के लिए अपने पुत्र को भेजना और हमारे धर्मी ठहराए जाने के लिए उसका फिर से जी उठाना है। कोई अन्य दर्शनशास्त्र, कोई अन्य ईश्वर दूर से इस तरह का उत्तर देने नहीं आता। अतः परमेश्वर का अधिकार अपने आप में है, परंतु यह यीशु मसीह में बार-बार प्रमाणित होता है।

डॉ. विलियम एडगर

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक लगातार परमेश्वर को सारी सृष्टि के महान राजा के रूप में दर्शाती हुई बात करती है, और संपूर्ण ब्रह्मांड पर उसके सक्रिय, शक्तिशाली शासन पर बल देती है। हम इसे प्रकाशितवाक्य 1:4-6 में यूहन्ना द्वारा अपने पाठकों को लिखे अभिवादन में देखते हैं। हम इसे प्रकाशितवाक्य 4-5 में स्वर्गीय सिंहासन कक्ष के विवरण में देखते हैं। हम इसे इस तथ्य में भी देखते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र की भीड़ परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन के सामने इकट्ठी होती है और प्रकाशितवाक्य 7:9-10 में उसकी स्तुति करती है। हम इसे इस तथ्य में भी देख सकते हैं कि स्वर्गदूत भी पद 11 और 12 में यही कार्य करते हैं। और हम इसे शेष पुस्तक में परमेश्वर के अपने सिंहासन पर विराजमान होने के नियमित उल्लेखों में देखते हैं।

केवल एक उदाहरण के रूप में, सुनें कि प्रकाशितवाक्य 1:4-6 में यूहन्ना ने एशिया माइनर की कलीसियाओं का अभिवादन कैसे किया है :

> यूहन्ना की ओर से आसिया की सात कलीसियाओं के नाम : उसकी ओर से जो है और जो था और जो आनेवाला है; और उन सात आत्माओं की ओर से जो उसके सिंहासन के सामने हैं, और यीशु मसीह की ओर से जो विश्वसयोग्य साक्षी और मरे हुओं में से जी उठनेवालों में पहिलौठा और पृथ्वी के राजाओं का हाकिम है, तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। वह हम से प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्‍वर के लिये याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन (प्रकाशितवाक्य 1:4-6)।

ध्यान दें कि इन थोड़े से पदों में परमेश्वर के राज्य के बारे में कितने उल्लेख हैं। परमेश्वर अपने सिंहासन पर है; यीशु पृथ्वी के राजाओं पर शासन करता है; और कलीसिया वह राज्य है जो परमेश्वर की सेवा करती है।

> पवित्रशास्त्र में परमेश्वर का राज्य विषय बहुत ही विस्तृत विषय है, और हर कोई इस बात से सहमत है कि यह यीशु की शिक्षा का मुख्य संदेश था। तो परमेश्वर के राज्य का क्या अर्थ है? अंततः इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर राजा है, कि परमेश्वर प्रभुता-संपन्न है, कि परमेश्वर ही प्रभु है, कि वही ब्रह्मांड का सर्वोच्च प्रभु है। पवित्रशास्त्र में अपने कथनों और उल्लेखों के आधार पर वास्तव में पवित्रशास्त्र में इसके दो मुख्य केंद्र हैं। एक यह है कि परमेश्वर आरंभ से लेकर अंत तक सब वस्तुओं पर सर्वोच्च प्रभु है — अर्थात् पूरे इतिहास में, हर समय में, हर एक स्थान पर, परमेश्वर ही राजा है। दूसरा है मानवीय इतिहास पर और सब मनुष्यों पर उसके प्रभुत्व के आधार पर उस राजत्व का प्रकटीकरण।

डॉ. मार्क एल. स्ट्रॉस

> परमेश्वर का राज्य उन लोगों पर सही, और सच्चा शासन है जो अपने जीवनों पर परमेश्वर के अधिकारपूर्ण दावे को उचित रूप से स्वीकार करते हैं, जो प्रेम के साथ, भरोसे के साथ, पूरी तरह से और अपनी इच्छा के साथ परमेश्वर के सर्वोच्च प्रभुत्व के प्रति समर्पण करते हैं। अब, इसका अर्थ यह है कि कलीसिया एक अर्थ में परमेश्वर के राज्य का दृश्य प्रकटीकरण है। कलीसिया वह माध्यम है जिसमें परमेश्वर का राज्य वर्तमान

> में सृष्टि, और इतिहास में दृष्टिगोचर बनाया जाता है। परंतु वह समर्पण जिसका हम अब अनुभव करते हैं वह तो केवल पूर्वगामी है। अंततः परमेश्वर सब बातों को नया कर देगा। परमेश्वर प्रत्येक शत्रु को नष्ट कर देगा। हमें परमेश्वर को सिद्ध रूप से जानने, और पूरी तरह से उसकी आज्ञा मानने में हमारे सामने आनेवाली प्रत्येक रूकावट को परमेश्वर दूर कर देगा। वह उन सब बाधाओं को हटा देगा। यह है परमेश्वर की परम प्रतिज्ञा। परंतु अभी हम अपने जीवनों पर परमेश्वर के उद्धार और परमेश्वर के प्रभुत्व को यीशु में स्वीकार करने के द्वारा अपनी इच्छा के साथ, प्रेम के साथ और स्वतंत्रता के साथ पूर्वाभासी रूप में शामिल होते हैं। और इसके द्वारा कलीसिया राज्य के अंतिम वरदान की गवाही देती है जिसकी प्रतिज्ञा *एस्खाटॉन,* अर्थात् अंत समय में है।
>
> **डॉ. स्टीव ब्लैकमोरे**

प्राचीन मध्य-पूर्वी सम्राटों के समान परमेश्वर ने अपने सेवकों को नियुक्त किया कि वे उसकी आज्ञाओं को पूरा करें — अर्थात् उन वासल सेवकों को जो उसकी ओर से उसके राज्य पर शासन करें और उसका संचालन करें। सामान्य शब्दों में, परमेश्वर ने वाचाई प्रशासकों के उत्तराधिकार की अधीनता में यह कार्य मनुष्यजाति को दिया।

जैसा कि हमने पहले के एक अध्याय में देखा था, वाचाई प्रशासन उन छः मुख्य वाचाओं में विकसित हुआ जो परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ बाँधी थीं : आदम, नूह, अब्राहम, मूसा, दाऊद, और मसीह के साथ बाँधी गई वाचाएँ। पहली दो वाचाओं — आदम और नूह के साथ — ने परमेश्वर को संपूर्ण पृथ्वी के सुजरेन राजा के रूप में पहचाना, और मनुष्य जाति को एक वासल राष्ट्र के रूप में चिह्नित किया जो पृथ्वी पर उसकी इच्छा को पूरा करता है। इन वाचाओं की शर्तों के तहत, परमेश्वर की सर्वोच्चता अभी भी इस पृथ्वी की सारी जातियों पर पाई जाती है; हर एक व्यक्ति उसके प्रति जवाबदेह है।

आदम और नूह के साथ अपनी वाचाओं के बाद, परमेश्वर ने अब्राहम, मूसा और दाऊद के साथ वाचा बाँधी, जिसने उसके शासन को एक विशेष रूप में प्राचीन इस्राएल तक फैला दिया।

एक उदाहरण के तौर पर, सुनिए निर्गमन 19:4-6 में परमेश्वर प्राचीन इस्राएल से क्या कहता है :

> तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूँ। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे (निर्गमन 19:4-6)।

इस अनुच्छेद में, परमेश्वर ने इस्राएलियों को वह उपकार याद दिलाया जो उसने उन्हें मिस्र की गुलामी से छुड़ाने के समय उन पर किया था। उसने इस्राएलियों की इस जिम्मेदारी का उल्लेख किया कि वे उस वाचा के प्रति आज्ञाकारिता के द्वारा विश्वासयोग्यता को प्रकट करें जो वह उनके साथ बाँध रहा था। और उसने उन्हें प्राप्त होनेवाली आशीषों के परिणामों को दर्शाया यदि वे वाचा के प्रति आज्ञाकारी बने रहते हैं।

विशेष रूप से दाऊद के साथ बाँधी गई वाचा में, परमेश्वर ने दाऊद के राजवंश को अपने लोगों के लिए परमेश्वर की आशीष और दंड के माध्यम के रूप में स्थापित किया। इस वाचा का उल्लेख 2 शमूएल 7:1-17 और भजन 89 और भजन 132 में किया गया है। यह दर्शाती है कि दाऊद के वंश परमेश्वर के वासल राजा

थे। उन्होंने परमेश्वर के सामने इस्राएल के पूरे राज्य को प्रस्तुत किया। अन्य सब वाचाओं के समान परमेश्वर ने उपकार को प्रकट किया, विश्वासयोग्यता की अपेक्षा की और दाऊद के घराने को उसकी आशीषों और दंड के परिणामों को याद कराया।

इस्राएल के इतिहास में बाद में दाऊद का वंश इतनी बुरी तरह से विफल रहा कि संपूर्ण इस्राएल राष्ट्र परमेश्वर के श्राप के अधीन बंधुआई में चला गया। परंतु बंधुआई में भी इस्राएल के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की कि अंत के दिनों में परमेश्वर दाऊद के धर्मी पुत्र के द्वारा अपनी वाचा को फिर से नया करेगा। यिर्मयाह 31:31 में यिर्मयाह भविष्यवक्ता ने इस नवीनीकरण का वर्णन नई वाचा के रूप में किया है। यह नई वाचा परमेश्वर के उपकार का परम प्रकटीकरण होगी। वह अपने लोगों के मनों को परिवर्तित कर देगा ताकि वे उसके प्रति विश्वासयोग्य रहें। वे उसकी वाचा की अनंतकाल की आशीषों का आनंद लेंगे, और वे फिर कभी श्रापित न होंगे। साथ ही साथ, परमेश्वर उन सबको दंड देगा जिन्होंने उसका, उसके वासल राजा का और उसके राज्य के लोगों का विरोध किया था।

दाऊद और प्राचीन इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचाओं का उद्देश्य हमेशा से यही था कि वे उनकी आशीषों को दाऊद और इस्राएल से आगे भी बढ़ाएँ। दाऊद के घराने पर परमेश्वर के राज्य का उद्देश्य इस्राएल के संपूर्ण राष्ट्र पर उपकार करना था, और इस्राएल की आशीषों का उद्देश्य संपूर्ण संसार पर उपकार करना था। हम इसे भजन 2, 67; यशायाह 2:2-4; और आमोस 9:11-15 में देख सकते हैं। परमेश्वर दाऊद के घराने से छुड़ानेवाले को भेजेगा, और वह छुड़ानेवाला इस्राएल को बचाएगा। और इस्राएल के द्वारा, वह पूरी सृष्टि को बचाएगा।

इस समय, परमेश्वर कलीसिया को मसीह के द्वारा छुड़ा रहा है, और हमें अपने पवित्र, वाचाई लोगों में शामिल कर रहा है। इसके फलस्वरूप, कलीसिया अब पुराने नियम के इस्राएल के राष्ट्र के साथ एक राज्य है।

सुनिए प्रकाशितवाक्य 1:5-6 में इस वाचाई संबंध को किस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है :

> यीशु मसीह . . . हम से प्रेम रखता है, और उसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है, और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया (प्रकाशितवाक्य 1:5-6)।

ये पद दर्शाते हैं कि क्योंकि यीशु हमें हमारे पापों से स्वतंत्र करने के लिए मरा, इसलिए हम अब परमेश्वर की निज संपत्ति और राष्ट्र हैं। हमारे पास अब वही पद है जो परमेश्वर ने पुराने नियम में इस्राएल को दिया था : "एक राज्य और याजक।"

परमेश्वर ने निर्गमन 19:6 में प्राचीन इस्राएल को यह पद दिया था, जहाँ वाचा की एक आशीष यह थी कि इस्राएल "याजकों का राज्य और एक पवित्र जाति" होगा।

> सदियों से बहुत से लोगों ने परमेश्वर के राज्य की प्रकृति के बारे में तर्क-वितर्क किया है। यह ऐसा स्पष्ट विवरण है जिसे हम बाइबल में पाते हैं, परंतु फिर भी यह एक बड़े विवाद का स्रोत रहा है कि इसका एक सही अर्थ क्या है। मेरे विचार से हम यह कह सकते हैं कि यह आधारभूत रूप से अपने सार में परमेश्वर का राज्य इस संसार में, कलीसिया में, व्यक्तिगत मानवीय हृदय में परमेश्वर के शासन का वर्णन करता है, ताकि जब मैं और आप पवित्रशास्त्र के अनुसार परमेश्वर के अनुसार जीवन जीते हैं, तो हम कह सकते हैं कि हम परमेश्वर के राज्य में सहभागी हो रहे हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

— डॉ. जॉन ऑस्वाल्ट

> परमेश्वर का राज्य क्या है। निश्चित रूप से हम इसका वर्णन कई रूपों में कर सकते हैं, परंतु मेरे विचार से यह कहना एक एक सहायक तरीका होगा कि यह वहाँ है जहाँ परमेश्वर का राज्य स्थापित होता है — यह वह क्षेत्र है जिसमें परमेश्वर का राज्य उसके राजा के द्वारा स्थापित किया जाता है जो परमेश्वर की स्तुति, परमेश्वर की महिमा की ओर अगुवाई करता है, और पृथ्वी पर जीवन के सभी प्रकार के रूपों में सुधार लाता है। और इसलिए हम परमेश्वर के राज्य को यीशु की शिक्षाओं में बहुत ही महत्वपूर्ण रूपों में पाते हैं। और नए नियम में यह पाते हैं कि यीशु वह राजा है जो बड़ी सामर्थ्य के साथ हमारे संसार में परमेश्वर के राज्य को ला रहा है। इसके लिए तकनीकी शब्द विस्फोट है। यहाँ एक सेंध है; अपने मसीहा-रूपी राजा के माध्यम से हमारे संसार में परमेश्वर का एक बहुत ही सामर्थी प्रवेश है। राज्य क्या है को स्पष्ट करने का एक बहुत अच्छा तरीका धर्मविज्ञानी गियरहारडस फ़ोस से आता है, और वह कहता है कि राज्य वहाँ आता है जहाँ सुसमाचार फैलता है, जहाँ मन परिवर्तित हो जाते हैं, जहाँ पाप और गलतियों पर विजय प्राप्त कर ली जाती है, जहाँ धार्मिकता की खेती की जाती है, और जहाँ परमेश्वर के साथ जीवित संगति स्थापित की जाती है।

— डॉ. ब्रैंडन क्रो

परमेश्वर का लक्ष्य हमेशा से अपने स्वर्गीय राज्य को पृथ्वी पर फैलाना, और इस पृथ्वी को विश्वासयोग्य लोगों से भरना रहा है। स्वर्ग में, परमेश्वर की इच्छा पहले से ही सिद्धता से पूरी होती है। परंतु पृथ्वी पर, उसके रचे गए प्राणी अक्सर उसकी इच्छा पूरी करने से इनकार कर देते हैं। वे परमेश्वर को राजा के रूप में स्वीकार करने से इनकार कर देते हैं, और इस संसार के राज्य अक्सर परमेश्वर के शासन का विरोध करते हैं। इसलिए जब यीशु ने प्रभु की प्रार्थना की, तो उसकी विनती यह थी कि एक दिन ये सारे विरोधी राज्य पराजित कर दिए जाएँ, ताकि केवल परमेश्वर का राज्य ही बना रहे।

सुनिए किस प्रकार प्रकाशितवाक्य 11:15 भविष्य के उस दिन के बारे में बात करता है :

> जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा (प्रकाशितवाक्य 11:15)।

परमेश्वर का विशेष राज्य तब तक बना रहेगा जब तक यह इस पूरे संसार पर विजय प्राप्त नहीं कर लेता और इसे भर नहीं देता। यह बाइबल की भविष्यवाणी की अंतिम मंजिल है। जब यीशु महिमा में वापस आएगा, तो परमेश्वर का विशेष शासन पृथ्वी के प्रत्येक राज्य को अपने में समा लेगा। यही आशा यिर्मयाह 31:31-34 में, जकर्याह 14:9 में, और पवित्रशास्त्र के कई अन्य अनुच्छेदों में प्रकट की गई है।

परमेश्वर का राजत्व उन सारी उपमाओं से कहीं बढ़कर है जो प्राचीन मध्य-पूर्व में पाई जाती हैं। प्राचीन संसार में, मानवीय सुजरेन कभी भी उस भलाई या उपकार को पूरा नहीं करते थे जिनकी प्रतिज्ञा उन्होंने अपनी वाचाओं में की थी। उन्होंने कभी अपने अधीन राजाओं की विश्वासयोग्यता को सिद्धता के साथ नहीं जाँचा, और न ही उन्होंने कभी वाचाई परिणामों को सिद्धता के साथ वितरित किया। परंतु परमेश्वर की वाचा में हमारा ईश्वरीय सुजरेन अपनी भलाई या उपकार की प्रतिज्ञाओं को पूर्ण रूप से पूरा करता है। वह सिद्धता से हमारी

विश्वासयोग्यता को जाँचता है। और वह वाचा की आशीषों और श्रापों के परिणामों के रूप में उचित दंड और अनुशासन प्रदान करता है। और जैसे कि हम देखने वाले हैं, उसने अपने राजकीय पुत्र के रूप में यीशु मसीह को हमारे बदले परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बनने और हमारी अविश्वासयोग्यता के परिणामों को सहन करने के लिए भेजा ताकि हम उसमें उद्धार को प्राप्त कर सकें।

परमेश्वर के सार्वभौमिक राजत्व की इस समझ को मन में रखते हुए, अब हम परमेश्वर के सेवक या वासल राजा के रूप में मसीह के राजत्व के संबंधित विषय की ओर मुड़ते हैं।

मसीह का राजत्व

> यीशु के राजत्व को दाऊद के प्राचीन राजत्व के प्रकाश में देखा जाना चाहिए क्योंकि यीशु ही आदर्श दाऊद है। वह *हा-मशीआख,* अर्थात् मसीहा है। और निस्संदेह पुराने नियम में दाऊद का राजत्व उस पद्धति के अनुसार है जिसे हम प्राचीन मध्य-पूर्व के संसार में देखते हैं, अर्थात् सुजरेन-वासल संबंध जहाँ सुजरेन, अर्थात राजा सामान्यतः एक संधि के माध्यम से अपने अधीन लोगों पर शासन करता है। और दाऊद इस संसार पर परमेश्वर का चुना हुआ शासक है। और इसलिए एक ऐसा भाव है जिसमें परमेश्वर ने अपने बदले शासन करने के लिए दाऊद को एक उप-शासक के रूप में चुना। और निस्संदेह यीशु ही वह है जो अंततः उसे पूरा करता है।

— डॉ. रॉबर्ट बी. चिज्म, जूनियर

यीशु के बारे में ब्रह्मांड के सुजरेन की अपेक्षा एक वासल या सेवक राजा के रूप में सोचना विचित्र लग सकता है। आख़िरकार, यीशु परमेश्वर है, और परमेश्वर उन सब वस्तुओं का सृष्टिकर्ता और शासक है जो अस्तित्व में हैं। हम बड़ी मजबूती के साथ यह पुष्टि करते हैं कि यीशु पूर्ण रूप से ईश्वरीय है, परंतु यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यीशु केवल परमेश्वर ही नहीं है। वह पूर्ण रूप से मानवीय भी है। और एक मनुष्य के रूप में, वह अपने पिता दाऊद के मानवीय सिंहासन पर विराजमान है, जिसने परमेश्वर के वासल राष्ट्र, अर्थात् प्राचीन इस्राएल पर राजा होने के मानवीय कार्यभार को संभाला था। इस भाव में, यीशु का राजत्व एक मानवीय कार्यभार है। और इसलिए, यीशु परमेश्वर का वासल राजा है, ठीक वैसे ही जैसे पुराने नियम में दाऊद था।

> बाइबल की वाचाई संरचना वास्तव में प्राचीन मध्य-पूर्वी राजाओं के बीच पाई जानेवाली संधि में निहित है। और अक्सर सुजरेन बड़ा राजा होता था और इस वाचा में बड़े राजा के साथ संबंधित एक वासल राजा होता था। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में राजा — दाऊदवंशी राजा — के रूप में यीशु को यहूदा के गोत्र का सिंह कहती है। और इसलिए ऐसी भाषा कुछ बातों को प्रकट करती है। एक बात जो यह दर्शाती है वह यह है कि यीशु न केवल यह प्रकट करता है कि परमेश्वर कौन है, बल्कि वह सच्चे मनुष्यत्व, अर्थात् मनुष्य होने की संपूर्ण प्रकृति को भी प्रकट करता है। और इस प्रकार नए नियम में दाऊद के पुत्र की अपनी भूमिका में परमेश्वर के पुत्र संबंधी भाषा वास्तव में दाऊदवंशी राजा, मसीहा के रूप में अक्सर उसकी भूमिका का उल्लेख करती है। और उस भाव में वह ऐतिहासिक प्रजा को प्रस्तुत करता है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के विषय में यह सब जातियों में फैले हुए परमेश्वर के लोग हैं, और वह हमारा

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> राजा, अर्थात् पिता के सामने हमारा प्रतिनिधि, या सुजरेन है। अतः वह इतिहास में, और वर्तमान में हमारा राजा है, एक संपूर्ण मानवीय प्राणी है जो पिता के सामने अपने लोगों का प्रतिनिधित्व करता है। निस्संदेह, वह परमेश्वर का भी हमारे सामने प्रतिनिधित्व करता है, परंतु यह इस सच्चाई को धुंधला नहीं करता कि वह पूर्ण रूप से मानवीय भी है और परमेश्वर के सामने हमारा प्रतिनिधित्व करता है।

— डॉ. ग्रेग पैरी

मसीह नाम एक शीर्षक है जो सीधे तौर पर दाऊदवंशी राजा के कार्यभार को दर्शाता है। मसीह शब्द का सामान्य अर्थ है, अभिषिक्त जन। यह पुराने नियम का शब्द है जिसका दाऊदवंशी राजाओं के लिए बार-बार प्रयोग किया जाता था क्योंकि जब वे अपना कार्यभार संभालते थे तो उनका अभिषेक किया जाता था। हम इसे 2 इतिहास 6:42; भजन 2:2, 6; भजन 18:50; भजन 20:6, 9; और भजन 45:1-2 जैसे स्थानों पर देखते हैं। इसी कारण, यीशु को भी प्रकाशितवाक्य 11:15 और 12:10 जैसे स्थानों पर परमेश्वर के मसीह के रूप में संबोधित किया गया है। वह परमेश्वर का अभिषिक्त जन, अर्थात् उसका वासल राजा है।

दाऊद के महान पुत्र के रूप में यीशु नई वाचा के उन सभी पहलुओं को पूरा करता है जिनकी प्रतीक्षा पुराने नियम में की जाती थी। यीशु में परमेश्वर के महानतम उपकार को प्रकट किया गया है। स्वयं मसीह ने हमारे बदले में विश्वासयोग्यता की सारी माँगों को पूरा किया है। जब वह हमारे बदले मरा तो उसने वाचाई श्रापों के परिणामों को सहा। और जब वह मृतकों में से जी उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया तो उसने वाचा की आशीषों के परिणामों को प्राप्त किया।

यीशु ने क्रूस पर मरने और मृतकों में से जी उठने के द्वारा परमेश्वर के मानवीय वासल राजा होने के अपने पद को प्राप्त किया। उसकी मृत्यु ने पाप के उस सारे अधिकार को हटा दिया जिससे वह परमेश्वर के लोगों को दोषी ठहरा और नाश कर सकता था।

जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 12:10-11 में पढ़ते हैं :

> अब हमारे परमेश्वर का उद्धार और सामर्थ्य और राज्य और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है, क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगानेवाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के सामने उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया है। वे मेम्ने के लहू के कारण . . . जयवन्त हुए (प्रकाशितवाक्य 12:10-11)।

क्रूस पर मसीह के बलिदान के कारण शैतान को हरा दिया गया है। और मसीह के पास अब परमेश्वर के राज्य में अधिकार है ताकि उसका उद्धार उसके लोगों को मिल सके।

और यीशु की आज्ञाकारिता ने उसे मृतकों में से जी उठने का पुरस्कार प्रदान किया और उसे अधिकार का ऐसा स्थान दिया जो मनुष्य, स्वर्गदूत या दुष्टात्मा के किसी भी रचित अधिकार से कहीं ऊँचा है।

और उसने मत्ती 28:18-19 में अपने पुनरुत्थान के बाद यह कहा :

> स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ (मत्ती 28:18-19)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

निस्संदेह, अपने ईश्वरीय स्वभाव में यीशु ने कभी अधिकार को प्राप्त नहीं किया। उसके पास यह हमेशा से था। परंतु जब वह मृतकों में से जी उठा, तो यीशु ने कहा कि पिता ने उसे जातियों पर राजा होने का अधिकार दिया है, अर्थात् वह पूरे स्वर्ग और पृथ्वी पर पिता का मानवीय वासल राजा बन गया था।

अपने पुनरुत्थान के बाद, जब यीशु स्वर्ग पर चढ़ गया, तो वह राजा के रूप में सिंहासन पर बैठाया गया। नया नियम इसे इब्रानियों 1:3; 10:12, और 12:2 जैसे अनुच्छेदों में स्पष्ट करता है, जहाँ यह कहता है कि यीशु पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठ गया। यह रूपक दर्शाता है कि पिता महान राजा या सुजरेन है, और कि यीशु, उसका पुत्र वह मानवीय वासल राजा है जो उसकी सेवा करता और उसका प्रतिनिधित्व करता है। यीशु दाऊद के घराने, और पृथ्वी के अन्य सब मानवीय राज्यों का अंतिम राजा है। और उसके द्वारा पूरा संसार नया बनाया जाएगा। सिंहासन पर विराजमान होने के बाद से यीशु ने राजा के रूप में कलीसिया पर राज्य किया है। और वह पृथ्वी की छोर तक उद्धार पहुँचाने के द्वारा अपने राज्य का विस्तार कर रहा है।

मानवीय राजाओं की विपरीतता में, परमेश्वर ने अपने पुत्र को क्रूस का मूल्य चुकाकर हमारा छुटकारा मोल लेने के लिए एक सिद्ध वासल राजा के रूप में भेजा है। उसने अपने पृथ्वी के जीवन में पूरी विश्वासयोग्यता को प्रकट किया और हमारी अविश्वासयोग्यता के परिणामों का दुःख सहा और उसने यह क्रूस के ऊपर किया। उसने हमारी क्षमा और विश्वासयोग्यता को मोल लेने के लिए अपना जीवन दे दिया, और वह हमें बचाना और सुरक्षा देना निरंतर जारी रखता है। हमें चाहिए कि हम अपने उपकारी परमेश्वर और राजा के प्रति विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में अभिव्यक्त प्रेमपूर्ण आदर के साथ उसके अनुग्रहकारी शासन के प्रति प्रत्युत्तर दें।

अब जबकि हमने परमेश्वर पिता के सुजरेन राजत्व और यीशु के वासल राजत्व के बारे में खोज कर ली है, इसलिए आइए अब हम यह देखें कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक परमेश्वर के राज्य के आधार पर परमेश्वर की कृपा का वर्णन कैसे करती है।

कृपा

वाचा के सुजरेन होने के रूप में परमेश्वर की कृपा को प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में कई रूपों में देखा जा सकता है। निस्संदेह, उसकी सबसे बड़ी कृपा अपने पुत्र को हमारे पापों के लिए मरने हेतु भेजना थी। इस विषय का उल्लेख प्रकाशितवाक्य 1:5; 5:9-10; 7:14; और 14:3-4 जैसे कई स्थानों पर किया गया है।

परंतु हम परमेश्वर की राजकीय कृपा को इस बात में भी देखते हैं कि वह किस प्रकार लोगों को अपने पास बुलाता है और हमें अपने राज्य का भाग बनाता है, जैसे कि प्रकाशितवाक्य 1:6; 11:15; और 17:14 में।

अपनी दया में उसने अपने लोगों को कई प्रकार के दंड से बचाया जिनकी चेतावनी अविश्वासियों के विरूद्ध दी गई थी, जैसे कि प्रकाशितवाक्य 7:3-4 और 9:4 में।

यहाँ तक कि प्रकाशितवाक्य की कलीसियाओं को दी गई भविष्यवाणी-संबंधी चेतावनियाँ भी हमारे लिए कृपा से भरे हुए अवसर हैं ताकि हम पश्चाताप करें। परमेश्वर ने अपने दंड को रोका ताकि लोगों के पास दोष से बचने का अवसर मिले। यूहन्ना ने इस प्रकार की कृपा का वर्णन प्रकाशितवाक्य 2:5, 16, 21 और 3:3,19 में किया है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

परंतु प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर के अनुग्रह और दया का शायद बार-बार प्रकट तरीका आत्मिक युद्ध के बीच अपने लोगों को बचाना है। अतः इस अध्याय में हम अपने विचार-विमर्श को परमेश्वर की राजा-रूपी कृपा पर केंद्रित करेंगे, विशेष रूप से इस पर कि वह कैसे अपने लोगों को इन संघर्षों में नाश होने से बचाता है।

> मेरे हिसाब से आत्मिक युद्ध प्रत्येक सच्चे मसीही की वास्तविकता है। यह इस बात को समझना है कि एक आत्मिक जगत है, कि शैतान है, और यह कि वे आत्माएँ, अर्थात् शैतान हमें पंसद नहीं करता है। यदि शैतान ने यीशु पर आक्रमण किया, तो आप यह कल्पना कर भी सकते हैं कि शैतान आज के विश्वासी पर भी आक्रमण करेगा, और हमें इसके लिए तैयार रहना है। जब यीशु दिकापुलिस जाता है तो पहली बात यदि यह होती है कि वह वहाँ एक दुष्टात्मा से भरे हुए व्यक्ति को देखता है, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि दुष्टात्मा से भरे होने जैसी बातें आज भी होती हैं, और हमें इसे बड़ी गंभीरता से लेना है, और हमें सुनिश्चित करना है कि जैसा वह पवित्र है वैसे ही हम पवित्र हैं ताकि हम इसे गंभीरता से ले सकें।
>
> **— डॉ. मैट फ्रीडमैन**

नए नियम में, आत्मिक युद्ध मुख्य रूप से पाप के विरूद्ध हमारे अपने आंतरिक संघर्ष नहीं हैं, बल्कि ये परमेश्वर और इस संसार में कार्यरत बुरी आत्मिक शक्तियों के बीच चलते रहनेवाला एक युद्ध है। और इस संघर्ष में परमेश्वर का काम करने एक तरीका इन बुरी शक्तियों के विरूद्ध अपने राज्य की रक्षा करना है। जैसा कि हमने पहले के एक अध्याय में उल्लेख किया था, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अक्सर परमेश्वर के अलौलिक क्षेत्र और स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के गैरलौकिक क्षेत्र की कार्य-प्रणाली को प्रकट करती है, और प्राकृतिक क्षेत्र, जहाँ हम रहते हैं, पर उनके प्रभाव के बारे में बात करती है। और मसीहियों के जीवनों के सारे आत्मिक युद्ध का सार यह है कि ये गैरलौकिक शक्तियाँ एक दूसरे के साथ लडती रहती हैं, कि वे हमारे संसार पर प्रभाव डालती हैं, कि वे हमारे जीवन को नुकसान पहुँचाने और हमें परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य बनाने का प्रयास करती हैं, और कि परमेश्वर हमें शैतानी प्रभाव और उसके कार्यों से बचाने के लिए स्वर्गदूतों को नियुक्त करता है।

> मसीहियों के लिए आत्मिक युद्ध का विषय बहुत ही जटिल होता है क्योंकि यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग रूप में प्रकट होता है। और इसका एक परिणाम यह होता है कि जब मसीही इस विषय पर चर्चा करते हैं, तो वे अक्सर चरम सीमाओं पर चले जाते हैं। एक चरम सीमा यह है कि लोग उन सारी बातों को प्रकृति या विज्ञान के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं जो घटित होता है, और वे आत्मिक युद्ध की वास्तविकता को नजरअंदाज कर देते हैं। परंतु घटित होनेवाली सब बातों को विज्ञान के द्वारा आसानी से स्पष्ट नहीं किया जा सकता। दूसरी चरम सीमा यह है कि लोग हर बात के पीछे दुष्टात्माओं को देखते हैं और सब बातों में आत्मिक टकराव को देखते हैं। मैं सोचता हूँ कि सच्चाई कहीं इन दोनों के बीच में है। जब हम आराधना सभा के लिए तैयार होते हैं, या फिर किसी आत्मिक, सुसमाचारिक कार्य में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं, या फिर दूसरे लोगों की आत्मिक रूप से सहायता करते हैं, तो हम अक्सर आत्मिक विरोध का सामना करते हैं। यह किसी बीमारी में, या आपकी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> सहायता करने के लिए किसी अधिकारी की अनिच्छा में प्रकट हो सकता है। यह शायद अचानक आई बाधाएँ हो सकती हैं जिन्हें आप सामान्य रूप से स्पष्ट न कर पाएँ। वास्तव में, हमारा भौतिक संसार पूरी तरह से आत्मिक संसार के प्रभाव में है। और इसी कारण बहुत सी भौतिक प्रक्रियाएँ जो हमारे जीवनों में कार्य करती हैं, वे आत्मिक संसार की घटनाओं को भी दर्शा सकती हैं। परंतु इन घटनाओं का कारण मुख्य बिंदु नहीं है। उनके शायद आत्मिक कारण हों, या शायद वे हमारे पाप का परिणाम हों। परंतु हम जहाँ कहीं भी हों और हमारे साथ जो भी होता हो, हमें यह समझना चाहिए कि हमारा प्रभु हमारी सुरक्षा करता है। हम उसकी सामर्थ्य – उसकी शक्ति पर निर्भर हो सकते हैं। हम उससे सहायता प्राप्त कर सकते हैं। और यह हमें भरोसा देता है, चाहे हम किसी भी प्रकार के आत्मिक प्रकटीकरण का सामना करते हों। वास्तविकता यह है कि हम अपने प्रभु, शरीर और आत्मा से संबंधित हैं। और हमारे स्वर्गीय पिता की इच्छा के बिना हमारे सिर का एक बाल भी नहीं गिर सकता। इसी कारण, किसी भी तरह के आत्मिक संघर्ष में, हम शांत और आश्वस्त रह सकते हैं कि विजय प्रभु की होगी, और — उसके साथ — हमारी भी होगी।
>
> **रेव्ह. आइवन बेस्पालोव**

मसीहियों को आत्मिक युद्ध में विजय के प्रति आश्वस्त किया गया है। ऐसा कुछ नहीं है जो दुष्टात्माएँ हमारे उद्धार को नष्ट करने में, या परमेश्वर के राज्य में हमारी मीरास छीनने में कर सकती हैं। आत्मिक युद्ध निराशाजनक और पीड़ादायक, और यहाँ तक कि भयानक भी हो सकता है। परंतु परमेश्वर की कृपा के कारण, यह लंबे समय तक हमारे विरूद्ध सफल नहीं हो सकता।

हम परमेश्वर की वाचाई कृपा की अपनी चर्चा को तीन भागों में बाँटेंगे। पहला, हम उस तरीके को देखेंगे जिसमें परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने राज्य की रक्षा की। दूसरा, हम देखेंगे कि उसने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अतिरिक्त नए नियम में अपने राज्य की रक्षा कैसे की। और तीसरा, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में उसकी कृपापूर्ण सुरक्षा पर ध्यान देंगे। आइए हम पुराने नियम में परमेश्वर की कृपा के साथ आरंभ करें।

पुराना नियम

पुराना नियम युद्धों के विवरणों से भरा हुआ है। इस्राएल लगातार अपने पड़ोसी राष्ट्रों के साथ युद्ध करता रहा। और यहाँ तक कि इस्राएली समय-समय पर आपस में ही लड़ते रहे। यद्यपि पुराने नियम के युद्ध के अधिकांश विवरणों ने ऐसे मनुष्यों को दर्शाया जो भौतिक हथियारों से लड़े, परंतु पवित्रशास्त्र कई बार यह दिखाने के लिए परदे को हटा देता है कि अदृश्य आत्मिक युद्ध भी चल रहे थे। और वास्तव में, इन अदृश्य युद्धों ने मानवीय सेनाओं की सफलता और विफलता को बहुत प्रभावित किया।

ये अदृश्य युद्ध सदैव एक तरफ परमेश्वर और उसके पवित्र स्वर्गदूतों, और दूसरी तरफ शैतान और उसकी दुष्टात्माओं के बीच लड़े जाते थे। यद्यपि इस्राएल का विरोध करनेवाली अधिकांश मानवीय सेनाओं ने यह माना कि वे अन्य देवताओं का अनुसरण कर रही थीं, परंतु व्यवस्थाविवरण 32:17 जैसे पदों ने स्पष्ट कर दिया कि उन राष्ट्रों के झूठे देवता वास्तव में दुष्टात्माएँ थीं।

> पुराने नियम में स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं को कभी-कभी भूराजनैतिक संघर्ष के एक भाग या उसके पीछे खड़े होने के रूप में दिखाया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे स्वर्गदूत और दुष्टात्माओं का इस बात में हाथ हो कि कैसे ये संघर्ष आगे बढ़ते हैं। उदाहरण के तौर पर, हम दानिय्येल 10 में एक उदाहरण देखते हैं जहाँ जिब्राईल स्वर्गदूत दानिय्येल के पास आता है और कहता है, "मैंने तेरी प्रार्थना सुन ली। मैं तुझसे मिलने के लिए कुछ समय पहले आया था, परंतु मैं फारस के राजा के साथ एक संघर्ष में चला गया था जिसमें मेरे साथ स्वर्गदूत मीकाएल भी सम्मिलित था।" अब कुछ हद तक, यह रहस्यमयी लेख है और हमारे लिए यह समझना कठिन है कि वास्तव में उसका क्या अर्थ है और यह भी कि ये घटनाएँ कैसे घटित हुई होंगी, और इस संघर्ष के पीछे कैसी प्रक्रिया रही होगी। परंतु हम देखते हैं कि स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ किसी न किसी रूप में भूराजनैतिक संघर्ष का कारण बनती हैं या उन्हें प्रभावित करती हैं। पुराने नियम के पाठकों के लिए राष्ट्रों के बीच के ये संघर्ष आवश्यक रूप में मानवीय या प्राकृतिक घटनाएँ नहीं थीं, परंतु उन सबकी एक अलौलिक पृष्ठभूमि थी। स्वर्गदूतों का संघर्ष दुष्टात्माओं के साथ था। अलौकिक सेनाएँ भी वैसे ही युद्ध कर रही थीं जैसे कि पृथ्वी की सेनाएँ कर रही थीं। उन्होंने सोचा कि जो कुछ भी उनके चारों ओर होता है उसका कारण यही है, और इसलिए दानिय्येल को इस बात से कोई हैरानी नहीं हुई होगी जब जिब्राईल को उसके पास आने से इस कारण रोका गया होगा क्योंकि फारस के राजाओं के साथ कुछ हो रहा था।
>
> **— डॉ. स्कॉट रेड**

उदाहरणों का एक समूह, जो स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के बीच लड़े जानेवाले अदृश्य युद्धों को दर्शाता है, निर्गमन 7-15 में पाया जाता है। मूसा के दिनों में, परमेश्वर के लोग मिस्रियों के गुलाम थे। परंतु परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूतों की सेनाओं को मिस्रियों और उनके देवताओं के विरूद्ध युद्ध लड़ने के लिए भेजा, ताकि वह अपने लोगों को उनके अत्याचार से बचाए। उसने मिस्रियों के विरूद्ध दस विपत्तियों को भेजने के साथ इसे आरंभ किया; उसने मृत्यु के दूत को भी भेजा जिसने प्रत्येक मिस्री घराने के पहलौठे को मार डाला। फिर अपनी सामर्थ्य के चरमोत्कर्ष पर उसने लाल समुद्र में मिस्री सेना को डुबाने के द्वारा अपने लोगों को छुड़ाया।

> पूरी बाइबल में, पुराने और नए नियम में, परमेश्वर के प्रकट होने का एक मुख्य तरीका यह है कि वह एक योद्धा है। निस्संदेह एक सबसे प्रसिद्ध अनुच्छेद निर्गमन 15:3 है जहाँ मिस्रियों की पराजय के बाद मूसा लाल समुद्र के पास गीत गा रहा है और वह यह कहता है, "यहोवा योद्धा है; उसका नाम यहोवा है।" यहोवा परमेश्वर की लंबी अभिव्यक्ति का छोटा रूप है, यहोवा साबोथ जिसका अर्थ है सेनाओं का यहोवा। और इसलिए वहाँ भी, निर्गमन 15:3 में मूसा जो कह रहा है, वह यह है कि परमेश्वर कौन है, उसके केंद्र और सार में मुख्य विचार उसके योद्धा होने का है। परमेश्वर योद्धा है।
>
> **— डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर**

फिर निर्गमन 15:11 में मूसा ने यह गया :

> हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कौन है?
> तू तो पवित्रता के कारण महाप्रतापी, और अपनी स्तुति करने वालों के भय के योग्य,
> और आश्चर्यकर्म का कर्ता है। (निर्गमन 15:11)

मूसा और उसके पाठक इस प्रश्न का उत्तर जानते थे। कोई भी देवता यहोवा के तुल्य नहीं है। आखिरकार, मिस्रियों के देवता सच्चे परमेश्वर को मिस्र की पूरी सेना को नाश करने से रोकने में पूरी तरह से अयोग्य थे।

पुराना नियम ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है। परमेश्वर ने बार-बार स्वयं को इस्राएल के योद्धा के रूप में प्रकट किया जो युद्ध में उनकी अगुवाई करता था। परंतु ये युद्ध केवल मानवीय शत्रुओं के विरूद्ध ही नहीं थे; उनमें हमेशा परमेश्वर अन्य राष्ट्रों के झूठे देवताओं के विरूद्ध युद्ध करने को जाता था।

उदाहरण के तौर पर, 2 राजाओं 19 में अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के राजा हिजकिय्याह को ताना मारा, क्योंकि उसका मानना था कि अश्शूरियों के देवता इस्राएल के परमेश्वर से अधिक शक्तिशाली थे।

इसलिए, 2 राजाओं 19:17-19 में हिजकिय्याह ने परमेश्वर से यह प्रार्थना की :

> हे यहोवा, सच तो है कि अश्शूर के राजाओं ने जातियों को और उनके देशों को उजाड़ा है। और उनके देवताओं को आग में झोंका है, क्योंकि वे ईश्वर न थे; वे मनुष्यों के बनाए हुए काठ और पत्थर ही के थे, इस कारण वे उनका नाश कर सके। इसलिये अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू हमें उसके हाथ से बचा कि पृथ्वी के राज्य राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है (2 राजाओं 19:17-19)।

हिजकिय्याह समझ चुका था कि अश्शूरियों के साथ युद्ध का अर्थ केवल सन्हेरीब और उसकी सेनाओं के साथ ही युद्ध नहीं था। यह यहोवा और अश्शूर के देवताओं के बीच एक आत्मिक युद्ध था। इस कारण उसने न केवल युद्ध में विजय के लिए प्रार्थना की, बल्कि यह भी कि यहोवा उनके देवताओं पर महान ठहरे।

और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया। उसी रात एक स्वर्गदूत ने अश्शूरियों की सेनाओं के 1,85,000 सैनिकों को मार गिराया, और सन्हेरीब पराजित होकर घर लौटा। सन्हेरीब की सेना को अश्शूरियों से युद्ध करना ही नहीं पड़ा। परमेश्वर की आत्मिक सामर्थ्य ने मानवीय सेना को पूरी तरह से नष्ट कर दिया।

> पुराने नियम में यहोवा का एक सबसे महत्वपूर्ण चित्रण राजा के रूप में परमेश्वर की भूमिका है, और एक राजा के रूप में उसके मध्य-पूर्वी राजाओं के समान कई कर्त्तव्य हैं, कई तरह के कर्त्तव्य और कार्य जो राजा के रूप में उसके कार्य पर प्रकाश डालते हैं। उनमें से एक कार्य योद्धा का कार्य रहा होगा। देखिए, प्राचीन मध्य-पूर्व में राजा सेनाओं का अगुवा, अर्थात् अपने राष्ट्र की सेनाओं का अगुवा होता था, और इस प्रकार वह महान योद्धा भी होता था। इसलिए परमेश्वर, या यहोवा का पूरे पुराने नियम में एक योद्धा होना परमेश्वर को एक ऐसे राजा के रूप में दर्शाता है जो कि योद्धा राजा है। वह बाहर जाता है और अपने लोगों को बचाता है, उनके लिए लड़ता है, उन्हें छुड़ाता है, और उनकी सुरक्षा करता है। एक योद्धा राजा के रूप में परमेश्वर की भूमिका न केवल राहत और शांति का कारण है, बल्कि साथ ही भरोसे का कारण भी है। जब हम अपने चारों ओर के संसार में जाते हैं, तो परमेश्वर के लोग आश्वस्त हो सकते हैं कि उनका परमेश्वर योद्धा है और वह बाहर जाता है और उनके लिए लड़ता

> है, और वह उनको बचाता है, और वह उनकी सुरक्षा करता है, और विजय उसी की होगी।
>
> — डॉ. स्कॉट रेड

पुराने नियम की युद्ध की कहानियाँ इस्राएल के सच्चे परमेश्वर और राष्ट्रों के झूठे देवताओं के बीच के आत्मिक संघर्षों के बारे में हमेशा पूरी तरह से स्पष्ट नहीं होती हैं। परंतु फिर भी, पुराना नियम नियमित रूप से यह दर्शाता है कि भौतिक युद्ध आत्मिक युद्धों से बहुत प्रभावित होते हैं।

अब जबकि हमने यह देख लिया है कि कैसे परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने राज्य को बचाने के द्वारा अपनी कृपा को किया, इसलिए आइए अब हम अपना ध्यान नए नियम के आत्मिक युद्ध में उसकी कृपा पर लगाएँ।

नया नियम

नए नियम में, आत्मिक युद्ध में सांसारिक सैन्य शक्तियाँ शामिल नहीं होतीं। इसलिए आत्मिक युद्ध में परमेश्वर की कृपा के इसके विवरण मुख्य रूप से गैरलौकिक क्षेत्र के अदृश्य संघर्षों पर ध्यान देते हैं, और इस पर भी कि ये आत्मिक संघर्ष प्राकृतिक क्षेत्र को कैसे प्रभावित करते हैं। अब, पुराने नियम के समान ही, परमेश्वर, स्वर्गदूत और दुष्टात्माएँ अभी भी मानवीय युद्धों और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में कार्यरत हैं। परंतु नए नियम में परमेश्वर की कृपापूर्ण सुरक्षा का केंद्र यह है कि कैसे वह अपने विश्वासयोग्य लोगों को दुष्ट शक्तियों से सुरक्षित रखता है।

पुराने नियम के समान, नया नियम ऐसे कई विभिन्न तरीकों का उल्लेख करता है जिनमें परमेश्वर कृपापूर्ण रूप से अपने लोगों की रक्षा करता है। इसलिए समय के अभाव के कारण, हम अपनी चर्चा को केवल दो तरीकों तक सीमित रखेंगे। पहला, आत्मिक युद्ध में परमेश्वर की कृपापूर्ण सुरक्षा मसीह की विजय में प्रकट होती है।

मसीह की विजय

नया नियम यीशु के जीवन, मृत्यु, पुनरूत्थान और स्वर्गरोहण को न केवल पाप और उसके परिणामों पर प्राप्त विजय के रूप में प्रस्तुत करता है, बल्कि परमेश्वर के आत्मिक शत्रुओं पर प्राप्त विजय के रूप में भी।

यीशु के जीवन ने दुष्टात्माओं पर कई रूपों में विजय को प्राप्त की, विशेषकर जैसा कि दुष्टात्माओं को निकालने में प्रकट किया गया है। हम इसे मत्ती 12:25-28 जैसे अनुच्छेदों में देखते हैं, जहाँ यीशु ने सिखाया कि वह दुष्टात्माओं को बड़ी सामर्थ्य और बल के साथ इसलिए निकाल पाया क्योंकि परमेश्वर का राज्य आ गया है।

और मसीह की मृत्यु के बारे में, सुनिए पौलुस ने कुलुस्सियों 2:15 में क्या लिखा है :

> और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई (कुलुस्सियों 2:15)।

इस पद में, प्रधानताएँ और अधिकार दुष्ट की शक्तियाँ हैं। और उन्हें क्रूस पर मसीह के द्वारा दिए गए बलिदान के कारण कमजोर और पराजित कर दिया गया है। हम इसी विचार को इब्रानियों 2:14 में देखते हैं।

मसीह के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण ने परमेश्वर की कृपापूर्ण सुरक्षा को उसके लोगों तक भी पहुँचा दिया है। उदाहरण के लिए, उनका परिणाम यह हुआ कि यीशु को अपने सारे आत्मिक शत्रुओं पर अधिकार प्राप्त हो गया, ताकि वह अपनी कलीसिया को सुरक्षा और आशीष दे सके। यह विचार स्पष्ट रूप से मत्ती 28:18-20, इफिसियों 1:19-23, और 1 पतरस 3:22 में सिखाया गया है।

नए नियम के द्वारा आत्मिक युद्ध में परमेश्वर की राजकीय कृपा के बारे में बात करने का दूसरा तरीका पवित्र आत्मा की सामर्थ्य का वर्णन करना है जो हमें शैतान और उसकी युक्तियों का सामना करने के योग्य बनाती है।

पवित्र आत्मा की सामर्थ्य

यीशु ने तब अपने और हमारे सारे आत्मिक शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली जब वह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में रहा, क्रूस पर मर गया, मृतकों में से जी उठा और स्वर्ग पर चढ गया। परंतु अभी तक उसने हमारे शत्रुओं को पूरी तरह से नाश करने के लिए उस सामर्थ्य का प्रयोग नहीं किया है। वास्तव में, परमेश्वर अभी भी दुष्टात्माओं को अनुमति देता है कि वे विभिन्न रूपों में संसार को प्रभावित करें। परंतु उसने हमें भी पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ्य दी है, ताकि हम उसका सामना कर सकें। हम इसे गलातियों 3:2-3, इफिसियों 3:16, कुलिस्सियों 1:9-11, और कई अन्य स्थानों पर देखते हैं।

केवल एक उदाहरण के रूप में, याकूब 4:5-7 को सुनिए :

> जिस आत्मा को उसने हमारे भीतर बसाया है, . . . वह तो और भी अनुग्रह देता है; इसलिये परमेश्वर के अधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा (याकूब 4:5-7)।

यहाँ याकूब ने सिखाया कि जो अनुग्रह हम पवित्र आत्मा से प्राप्त करते हैं, वह हमें आत्मिक युद्ध के लिए सामर्थी बनाता है, इस संदर्भ में हमें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने में और दुष्ट की परीक्षाओं और प्रभावों का सामना करने में हमारी सहायता करने में।

> मेरे विचार में आत्मिक युद्ध के लिए सामर्थी बनाने में पहला काम जो पवित्र आत्मा करता है, वह है हमें आत्मिक क्षेत्र के बारे में जागरूक करना। हम केवल उसी चीज़ की ओर बढ़ते हैं जो हम देख सकते हैं और महसूस कर सकते हैं। परंतु इस बात से अवगत होना बहुत ही महत्वपूर्ण है कि एक आत्मिक क्षेत्र है जिसमें हम कार्य और युद्ध करते हैं। इसलिए सबसे पहले वह हमें आत्मिक क्षेत्र के प्रति अवगत कराता है। वह हमें पाप का बोध कराता है। जब हम अपने जीवनों में पाप पर विजय प्राप्त करते हैं, तो सबसे पहली बात हमें पाप के बारे में अवगत होना है, और फिर वह हमें पाप पर विजय पाने के लिए सामर्थ्य देता है। और साथ ही, उस परिस्थिति में प्रार्थना में हमारी अगुवाई करना और युद्ध में शामिल होना हमारे जीवनों में उसकी भूमिका में महत्वपूर्ण है।
>
> — डॉ. के. एरिक थोनेस

इफिसियों 6 में पौलुस एक सैनिक के शस्त्रों और हथियारों के रूपक का प्रयोग इस बात का वर्णन करने के लिए करता है कि परमेश्वर आत्मिक युद्ध में हमें कैसे बचाता है। विशेष रूप से, उसने मसीहियों के द्वारा परमेश्वर के सारे शस्त्रों को धारण करने के बारे में बात की।

इफिसियों 6:12-13 में उसके शब्दों को सुनिए :

> क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परंतु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम बुरे दिन में सामना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको (इफिसियों 6:12-13)।

फिर पद 17 और 18 में पौलुस यह कहते हुए आगे बढ़ा कि पवित्र आत्मा इन शस्त्रों की रचना करने में और युद्ध में हमारी प्रेरणा और शक्ति दोनों के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। सुनिए जो उसने कहा :

> आत्मा की तलवार, जो परमेश्वर का वचन है, ले लो। हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो (इफिसियों 6:17-18)।

जब तक यीशु उस कार्य को पूरा करने के लिए वापस नहीं आ जाता, जो उसने आरंभ किया है, तब तक नया नियम हमें उन गैरलौकिक शक्तियों के विरूद्ध, जो अब भी इस संसार में कार्यरत हैं, आत्मिक युद्ध में बने रहने के लिए बुलाता है। और यह प्रतिज्ञा करता है कि पवित्र आत्मा हमें इसके लिए हथियार और सामर्थ्य देगा।

जैसा कि पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 10:4 में कहा है :

> क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं (2 कुरिन्थियों 10:4)।

हमारे हथियारों में ईश्वरीय सामर्थ्य हैं क्योंकि वे पवित्र आत्मा से आते हैं। और वे हर तरह के आत्मिक खतरे, अर्थात् झूठी शिक्षाओं से लेकर स्वयं शैतान तक, के विरुद्ध प्रभावशाली हैं।

> आइए इसका सामना करें, शैतान हमें इस पृथ्वी पर दुःख ही देगा। जब ऐसा होता है, तो प्रश्न यह है कि क्या कोई आशा है? क्या मैं बिल्कुल अकेला हूँ? क्या परमेश्वर इससे अवगत है और इसके बारे में कुछ कर रहा है? और स्पष्ट उत्तर है, हाँ वह है, और उसने हमें शैतान के किसी भी आक्रमण पर विजय पाने के लिए भरपूर सामर्थ्य दी है। इस विषय में मेरा एक पसंदीदा अनुच्छेद मैं अभी आपके सामने पढ़ना चाहता हूँ। 1 यूहन्ना 4:3-4 में यूहन्ना कहता है, "और जो आत्मा यीशु को नहीं मानती, वह परमेश्वर की ओर से नहीं; और वही तो मसीह के विरोधी की आत्मा है; जिसकी चर्चा तुम सुन चुके हो, कि वह आनेवाला है: और अब भी जगत में है। हे बालको, तुम परमेश्वर के हो, और तुम ने उन पर जय पाई है; क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।" परमेश्वर प्रतिज्ञा करता है कि हमारे पास बड़ी सामर्थ्य है। और यह सामर्थ्य का संघर्ष ही है। शैतान के पास बहुत शक्ति है, हमसे भी अधिक, परंतु इस बात के अतिरिक्त कि हमारे पास परमेश्वर है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

श्री स्टीव डगलस

अब जबकि हमने देख लिया है कि परमेश्वर ने कैसे पुराने नियम और नए नियम के आत्मिक युद्धों में अपनी कृपा को प्रकट किया, इसलिए आइए अब हम अपना ध्यान इस बात की ओर लगाएँ कि वह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अपने लोगों को कैसे बचाता है और कैसे उनके शत्रुओं के विरूद्ध लड़ता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

> और मेरे विचार से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें यह सिखाती है, विशेषकर अध्याय 12 जैसे अध्यायों में, कि जो कुछ इस पृथ्वी पर हो रहा है, वह उससे संबंधित है जो स्वर्गीय स्थानों में हो रहा है, और उस आत्मिक युद्ध का संबंध वास्तव में उससे है जो वास्तव में इतिहास में हो रहा है, और जो वास्तव में हमारे जीवनों में हो रहा है, और कि आत्मिक शक्तियाँ इतिहास में कार्य कर रही हैं, और कि वह बड़ा अजगर शैतान क्रियाशील है, और पशु के पीछे है, और कि ये सब आपस में संबंधित हैं, और कि जो सुरक्षा मसीहियों को चाहिए वह वास्तविक कलीसियाओं और उन समुदायों में हैं, जो लौदीकिया और इफिसुस में पाई जाती हैं, परंतु उनकी सुरक्षा मेम्ने में भी है, अर्थात् जी उठे मेम्ने में। इसलिए स्वर्गीय स्थानों में शैतान और यीशु के बीच जो कुछ हो रहा है और जो युद्ध वहाँ चल रहा है, उनका संबंध इतिहास में प्रकट होता है, न केवल पहली सदी में बल्कि अब भी। और हम उन बातों को संसार में अभी होता हुआ देखते हैं, जहाँ मसीही अपने विश्वास के कारण दुःख उठा रहे हैं। ये केवल राजनीतिक शक्तियाँ ही नहीं हैं जो कार्य कर रही हैं। ये शैतानी शक्तियाँ हैं जो कार्य कर रही हैं।

— डॉ. ग्रेग पैरी

प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में यूहन्ना ने मसीहियों को आत्मिक संघर्ष के बारे में सावधान किया है जो मनुष्यजाति के पाप में पतन के समय से ही चल रहा है, और जो मसीह के पुनरागमन तक लगातार चलता रहेगा। यूहन्ना ने प्रतीकात्मक रूप से इस आत्मिक संघर्ष का वर्णन प्रकाशितवाक्य 12 में पशु और स्त्री के बीच के युद्ध के रूप में, और प्रकाशितवाक्य 13 में समुद्र के पशु और पृथ्वी के पशु के बीच के युद्ध के रूप में किया। यूहन्ना चाहता था कि उसके पाठक यह जान लें कि जिस सताव का वे अनुभव कर रहे थे, और जिन परीक्षाओं का वे सामना कर रहे थे, वे प्रत्यक्ष रूप से मसीह और उसके शत्रुओं के बीच के आत्मिक संघर्ष के फलस्वरूप थीं।

पुराने नियम के समान, यूहन्ना ने दर्शाया कि स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं के बीच की आत्मिक लड़ाई ने मानवीय राजनीति को प्रभावित किया है। उदाहरण के तौर पर, हम इसे ऐसे देखते हैं जैसे प्रकाशितवाक्य 16:14-16 में पृथ्वी के राजा परमेश्वर के विरूद्ध युद्ध करने के लिए एकत्र हुए। एक और स्पष्ट उदाहरण यह स्पष्टीकरण है कि प्रकाशितवाक्य 17 में पशु के सिर और उसके सींग पृथ्वी के राजा हैं। और निस्संदेह यूहन्ना के मूल पाठक पृथ्वी के उन शासकों से सताव झेल रहे थे जिन्हें कम से आंशिक रूप से दुष्ट शक्तियों ने प्रेरित किया था।

परंतु नए नियम के समान, यूहन्ना ने भी स्पष्ट किया कि उसके मूल पाठकों द्वारा लड़े गए आत्मिक युद्ध मुख्य रूप से गैरलौकिक क्षेत्र में हुए। वे मसीह के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने, पाप का सामना करने, और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने के लिए व्यक्तिगत संघर्ष थे; वे दूसरे मनुष्यों के विरुद्ध हथियार उठाने की बुलाहटें नहीं थीं।

परंतु प्रत्येक संदर्भ में — चाहे वह आकाशीय संघर्षों के बारे में बात कर रहा हो, या फिर मानवीय राजनीति के बारे में, या व्यक्तिगत संघर्षों के बारे में — यूहन्ना ने अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि उनका परमेश्वर कृपालु रक्षक है। वह उन्हें बड़े हमलों से बचाएगा, उन्हें विश्वासयोग्य बने रहने के लिए सामर्थ्य देगा, और अंततः उन्हें अविवादित शांति प्रदान करेगा।

> प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आत्मिक युद्ध पर बहुत ध्यान देती है। यह एक तरफ परमेश्वर और मसीह और उसके सेवकों तथा दूसरी तरफ शैतान और उसके सेवकों के बीच बड़े विरोध को चित्रित करती है। यह हमारी इस बात को समझने में सहायता करने के लिए है कि यह निष्ठा का प्रश्न है — क्या आप परमेश्वर का अनुसरण कर रहे हैं या फिर अपने आप का और क्या इस प्रक्रिया में वास्तव में शैतान के राज्य से तो नहीं जुड़ रहे हैं? इस बड़े विरोधाभास को देखना हमारे लिए महत्वपूर्ण है। वह दूसरी बात जिसकी ओर मैं आपका ध्यान आकर्षित करूँगा वह यह है कि यह हमारे समर्पण के बारे में पूछता है। यह पूछता है कि हमारे मन कहाँ जा रहे हैं, हमारे हृदय कहाँ जा रहे हैं, न केवल हमारा बाहरी व्यवहार। तीसरी बात जो मेरे विचार से शामिल है, वह यह है कि शैतान एक जालसाज़ है, कि उसके पास ऐसी बातें हैं, जो सच्चाई के साथ इतनी मिलती जुलती हैं कि वे लोगों को फंसाने के लिए काफी हैं, परंतु वे नकली हैं, और उस नकली चरित्र को पहचानना जो अभी भी आकर्षक हो सकता है, हमारे लिए आज एक चुनौती है।
>
> **— डॉ. वेर्न एस. पोयथ्रेस**

आत्मिक युद्ध के कारण आए तनावों और समस्याओं के प्रत्युत्तर में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अपने पाठकों को परमेश्वर की कृपापूर्ण सुरक्षा के बारे में सोचने के कम से कम तीन भिन्न-भिन्न तरीके प्रदान करती है। पहला, यह बल देती है कि मसीह ने पहले से ही विजय को उसके प्रति विश्वासयोग्य रहनेवाले सभी लोगों के लिए प्राप्त कर लिया है।

प्रकाशितवाक्य बल देता है कि मसीह के जीवन, मृत्यु, गाड़े जाने, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण ने आत्मिक युद्ध में हमारी अंतिम विजय को सुरक्षित कर दिया है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5 इस विजय को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं, जिसमें यीशु को परमेश्वर के उस वध किए मेम्ने के रूप में चित्रित किया जाता है जो परमेश्वर के शत्रुओं के विरूद्ध दंड की पुस्तक को खोलने के योग्य पाया जाता है। अपने शत्रुओं पर मसीह की विजय ने लड़ाई को समाप्त नहीं कर दिया। परंतु इसने यह अवश्य सुनिश्चित कर दिया कि अंततः उसके शत्रु पूरी तरह से नष्ट किए जाएँगे, और उसके विश्वासयोग्य लोग सारी आशीषों को प्राप्त करेंगे। इस भाव में, परमेश्वर की कृपा और सुरक्षा हम पर विजय की मुहर लगाने का रूप लेती है। हम किसी भी तरह से विजय से चूक नहीं सकते क्योंकि मसीह ने पहले से ही विजय प्राप्त कर ली है। हमें तो बस तब तक स्थिर बने रहना है जब तक वह इसे पूरा नहीं कर देता।

प्रकाशितवाक्य के द्वारा आत्मिक युद्ध में परमेश्वर की कृपापूर्ण सुरक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करने का दूसरा तरीका हमें यह याद दिलाने के द्वारा है कि पवित्र आत्मा वर्तमान में मसीह की विजय को विश्वासियों के जीवनों में लागू कर रहा है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

जब मसीह ने आत्मिक युद्ध में हमारी विजय को सुरक्षित किया, तो उसने उस विजय की आशीषों को अपने विश्वासयोग्य लोगों के साथ बाँटने के अधिकार को प्राप्त किया। और अपनी कृपा में उसने पवित्र आत्मा को नियुक्त किया कि वह हमारे जीवनों में उन आशीषों को लागू करे, या हम ऐसा कह सकते हैं कि उन आशीषों को हम में बाँट दे।

इनमें से बहुत सी कृपापूर्ण आशीषें उन बातों से जुड़ी हैं जिन्हें हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देखते हैं। उदाहरण के लिए, रोमी साम्राज्य का नाश हो चुका है। वास्तव में, पूरे इतिहास में कलीसिया को नाश करने का प्रयास करनेवाली सभी शक्तियाँ असफल हुई हैं। पराजित होना तो दूर की बात, परमेश्वर का राज्य प्रत्येक जाति, कुल, लोगों और भाषा में बढ़ता जा रहा है। और प्रकाशितवाक्य 7 के अनुसार अंततः यह उस कार्य को पूरा करेगा।

एक तीसरा तरीका जिसमें प्रकाशितवाक्य आत्मिक युद्ध में परमेश्वर की कृपापूर्ण सुरक्षा को दर्शाता है, वह है हमें यह याद दिलाना कि जब मसीह वापस आएगा तो परमेश्वर हमारे आत्मिक शत्रुओं को पूरी तरह से नष्ट करने के द्वारा अपनी विजय को पूरा करके इस युद्ध को समाप्त करेगा।

प्रकाशितवाक्य हमें यह भरोसा देता है कि जब मसीह वापस आएगा, तब शैतान और उसके अनुयायी पूरी तरह से नष्ट कर दिए जाएँगे। वे इतने बलहीन कर दिए जाएँगे कि हमें न तो परीक्षा में डाल सकेंगे और न परेशान कर सकेंगे। उनका दंड उन्हें इतना सीमित कर देगा कि उनके लिए फिर लड़ना संभव ही नहीं होगा।

प्रकाशितवाक्य 17 और 18 बड़ी वेश्या, बेबीलोन के के दंड, और उसका अनुसरण करनेवाले पृथ्वी के सारे राजाओं और निवासियों के दंड का वर्णन करते हैं। प्रकाशितवाक्य 20 अजगर और उसकी सेना की अंतिम पराजय का वर्णन करता है। और प्रकाशितवाक्य 21 और 22 सिखाते हैं कि नया स्वर्ग और नई पृथ्वी बुराई की उपस्थिति से पूरी तरह से स्वतंत्र होगी।

जब परमेश्वर के सारे शत्रु बलहीन कर दिए जाएँगे, तो बड़े आत्मिक युद्ध का अंत हो जाएगा, और परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग अविरल शांति में जीएँगे। यह परमेश्वर की कृपा और सुरक्षा की परम अभिव्यक्ति होगी; वह सदा के लिए पूरी तरह से सुरक्षित होंगे।

प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक में, हम परमेश्वर की कृपा को अपने लोगों की जरूरतें पूरी करने और उनकी सुरक्षा करने में देख सकते हैं। यीशु ने क्रूस पर परमेश्वर के लोगों के लिए विजय को मोल लिया, और फिर से जी उठा ताकि उसकी विजय परमेश्वर के सब विश्वासयोग्य लोगों पर लागू की जा सके। वर्तमान में, कलीसिया आंशिक रूप से उस विजय का अनुभव करती है। हमारे पास में परमेश्वर की निश्चित प्रतिज्ञा है कि जब मसीह वापस आएगा, तो हम पूरी तरह से उसकी विजय का आनंद लेंगे। मसीह के सारे शत्रुओं को दंड दिया जाएगा, और हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर अपनी महिमामय मीरास को प्राप्त करेंगे।

अब तक हमने अपने अध्याय में सुजरेन और वासल राजाओं के रूप में परमेश्वर और मसीह के वाचाई राजत्व की जाँच की है, और इस बात की भी खोज की है कि प्रकाशितवाक्य अपने वाचाई लोगों के प्रति परमेश्वर की कृपा को किस प्रकार दर्शाता है। इसलिए, अब हम अपने तीसरे मुख्य विषय की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं : राज्य के नागरिक होने के नाते परमेश्वर हमसे कैसी विश्वासयोग्यता को दर्शाने की मांग करता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विश्वासयोग्यता

जैसा कि हम देख चुके हैं, परमेश्वर के साथ हमारे संबंध की कम से कम तीन विशेषताएँ प्राचीन सुजरेन-वासल संधियों या वाचाओं के समानांतर हैं : अपने लोगों के प्रति परमेश्वर की कृपा; अपने वासल राज्य के रूप में परमेश्वर हमसे जिस विश्वासयोग्यता या आज्ञाकारिता की माँग करता है; और उस आज्ञाकारिता के प्रत्युत्तर में आशीषों के परिणाम, और अवज्ञाकारिता के प्रत्युत्तर में श्राप। अब हम अपना ध्यान उस विश्वासयोग्य सेवा की ओर लगाना चाहते हैं जिसकी अपेक्षा परमेश्वर उन लोगों से करता है जिनका वह अपने अनुग्रह से उद्धार करता है।

जब प्रेरित यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखा, तो वह परमेश्वर के साथ कलीसिया के वाचाई संबंध से अवगत था। और उसके लिखने का एक कारण एशिया माइनर की कलीसियाओं को उत्साहित करना था कि वे अपनी सब चुनौतियों में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें। वह चाहता था कि वे परमेश्वर द्वारा दिखाई गई सारी दयालुता को स्मरण करें, और साथ ही परमेश्वर के द्वारा दी गई आशीषों को भी, ताकि वे प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य आज्ञाकारिता में जीएँ।

आपको पिछले एक अध्याय से याद होगा कि प्रकाशितवाक्य में संबोधित कलीसियाओं ने परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता के प्रति समझौता करने की कई परीक्षाओं का सामना किया। यूहन्ना के वास्तविक पाठकों ने परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य होने में कम से कम चार प्रकार की विभिन्न परीक्षाओं का सामना किया।

पहली, व्यापारी संघों के अपने सरंक्षक देवता थे, और उनकी शर्त थी कि उनके सदस्य उन्हीं झूठे देवताओं की आराधना करें। इसने विश्वासियों को मूर्तिपूजा में लगने के लिए प्रलोभित किया ताकि उन्हें कार्य और व्यापार करने के अवसर मिलें।

दूसरी, रोमी साम्राज्य ने अपनी प्रजा से माँग की कि वे इसके देवताओं और इसके सम्राट की आराधना करें। इसने मसीहियों को अन्यजातियों के देवताओं की आराधना करने के लिए प्रलोभित किया ताकि वे प्रशासन के दंड से बच सकें।

तीसरी, यहूदी धर्म ने मसीहियों पर दबाव डाला कि वे मसीह को त्याग दें। यहूदी धर्म को अन्यजातियों की मूर्तिपूजा से विशेष छूट दी गई थी, और मसीहियत को भी मूल रूप से वह छूट प्राप्त थी। परंतु जैसे-जैसे यहूदी धर्म ने मसीहियत से दूरी बनाई, यह छूट कलीसिया के लिए बंद हो गई। इससे बहुत से यहूदी मसीहियों ने मसीह को त्यागकर पारंपरिक यहूदी धर्म की ओर लौट गए ताकि वे रोमी सताव से बच सकें।

चौथी, पूरे रोमी साम्राज्य में स्वच्छंद मसीहियों ने अन्यजातियों के कार्यों और लैंगिक अनैतिकता में शामिल होने के द्वारा अपने विश्वास के साथ समझौता किया। उन्होंने दूसरों को भी उत्साहित किया कि वे भी इसी पाप में उनका अनुसरण करें।

इन परीक्षाओं ने एशिया माइनर की कलीसियाओं की विश्वासयोग्यता के सामने बड़ी चुनौतियों को रखा। इस संदर्भ में, यूहन्ना द्वारा इस पुस्तक को लिखने का एक महत्वपूर्ण कारण इन विरोधी समूहों के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता को खत्म करना, और परमेश्वर के प्रति उनकी विश्वासयोग्यता को मजबूत बनाना था।

विश्वासयोग्यता के विषय पर हमारी जाँच प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पाई जानेवाली विश्वासयोग्यता की दो प्राथमिक अभिव्यक्तियों पर केंद्रित होगी : स्थिरता और आराधना। आइए पहले प्रकाशितवाक्य की स्थिरता की बुलाहट को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

स्थिरता

स्थिरता को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है :

> परीक्षा, विरोध या निराशा के बावजूद भी विश्वास और कार्यों में विश्वासयोग्य बने रहना।

स्थिर रहने का अर्थ है कि किसी भी और सब तरह की शक्तियों पर विजय प्राप्त करना जो हमें परमेश्वर के प्रति हमारे विश्वास को त्यागने या उसके विरूद्ध संपूर्ण और अंतिम रूप में विद्रोह करने के लिए उकसाती हैं।

उन बहुत सी परीक्षाओं के प्रत्युत्तर में जिनका सामना एशिया माइनर के विश्वासियों ने किया, यूहन्ना ने अपने पाठकों को बार-बार स्थिर रहने या विजय पाने की बुलाहट दी। ये उपदेश प्रकाशितवाक्य 2 और 3 में कलीसियाओं को लिखे प्रत्येक पत्र, और शेष संपूर्ण पुस्तक में भी पाए जा सकते हैं।

पत्रों में, हम इन्हें प्रकाशितवाक्य 2:7, 11, 17, 26; और 3:5, 12, 21 में देखते हैं। हमें इन्हें प्रकाशितवाक्य 14:12; 16:15; 18:4; 20:4; 21:7; और 22:7, 11, 14 जैसे स्थानों में भी देखते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि स्थिरता प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक का सबसे महत्वपूर्ण विषय है।

> प्रकाशितवाक्य के केंद्रीय भाग में हम जय पाने की भाषा को बहुत अधिक पाते हैं, जैसा कि हम सात कलीसियाओं को लिखे पत्रों में देखते हैं। 11:7 और 13:7 में हम पशु या उस दुष्ट को देखते हैं, जो पवित्र लोगों पर, या परमेश्वर के संदेशवाहकों, अर्थात् परमेश्वर के गवाहों पर विजय को प्राप्त कर रहा है, या परमेश्वर के प्रतिनिधि पर विजय प्राप्त करके उन्हें मार रहा है। और फिर, 12:11 में, हम इसी संघर्ष पर एक स्वर्गीय दृष्टिकोण को पाते हैं, और वह यह है कि उन्होंने उस पर विजय प्राप्त की — इस संदर्भ में, उन्होंने शैतान पर विजय प्राप्त की — उन्होंने मेम्ने के लहू और अपनी गवाही के वचन के द्वारा उस पर विजय प्राप्त की, और उन्होंने मृत्यु के सामने भी अपने जीवन को प्रिय नहीं जाना। और प्रकाशितवाक्य यह कहते हुए आगे बढ़ता है कि कैसे ये विजयी लोग परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े हैं क्योंकि उन्होंने वध किए गए मेम्ने के समान उस पशु पर विजय पाई है। वह तो विजय पानेवाला सिंह है, परंतु उसे एक मेम्ने के रूप में भी दर्शाया गया है। उस सिंह के समान जो कि मेम्ना था और जिसने शहादत के कारण विजय प्राप्त की, परमेश्वर के ये लोग संसार के विरुद्ध लड़कर विजय प्राप्त नहीं करते, बल्कि वे परमेश्वर पर विश्वास करने और अपनी गवाही के द्वारा विजय प्राप्त करते हैं, क्योंकि जब संसार हमारे साथ बुरा करता है, तब भी हम विजय प्राप्त करते हैं क्योंकि हम स्वयं परमेश्वर के हैं। एशिया माइनर की इन सात कलीसियाओं ने अलग-अलग परीक्षाओं का सामना किया और प्रत्येक को विजय पाने की बुलाहट दी गई थी। हममें से प्रत्येक के सामने अलग-अलग परीक्षाएँ आती हैं। हम शायद किसी और की परीक्षा के कारण उससे जलन रखते हों या फिर किसी और की परीक्षा से भयभीत हों, परंतु हमारे पास अपनी परीक्षा है, और हममें से प्रत्येक को विजयी होने के लिए बुलाया गया है। परीक्षा कैसी भी हो, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंत में अध्याय 21 में यह प्रतिज्ञा आती है कि जो जय पाते हैं, परमेश्वर उनसे कहता है, "मैं उनका परमेश्वर हूँगा और वे मेरी संतान होंगे।"

— डॉ. क्रेग एस. कीनर

हम पाँच प्रकार की स्थिरता का उल्लेख करेंगे जिन्हें यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दर्शाया है; हम विश्वास में स्थिरता के साथ आरंभ करेंगे।

इब्रानियों 11:1 में पवित्रशास्त्र विश्वास को इस प्रकार परिभाषित करता है :

> अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है (इब्रानियों 11:1)।

उस समय परमेश्वर पर भरोसा रखना कठिन हो सकता है जब हमारे जीवनों की परिस्थितियाँ उस प्रकार की सुरक्षा, प्रबंध और आशीष को प्रकट नहीं करती जिनके बारे में हम पवित्रशास्त्र में पढ़ते हैं। जब परिस्थितियाँ हमारे विरुद्ध होती हैं तो यह सोचना आसान होता है कि हमने गलती की है, कि हमारे साथ धोखा हुआ है, कि बाइबल का परमेश्वर वास्तविक नहीं है, और कि हमें उसके प्रति किसी प्रकार की विश्वासयोग्यता रखने आवश्यकता नहीं है। और यह पहली सदी में भी वैसा ही था जैसा आज है। इसलिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को लिखते हुए यूहन्ना का एक मुख्य विषय अपने पाठकों को इस बात से आश्वस्त करना था कि बातें वास्तव में उससे कहीं अलग थीं जैसी वे उन्हें दिखाई दे रही थीं। संसार जैसा दिखाई देता है, उससे कहीं अधिक बुरा है; और परमेश्वर का राज्य उससे कहीं अच्छा है जिसकी वे कल्पना कर सकते हैं।

यूहन्ना के मूल पाठकों ने इन बातों पर विश्वास करने की कई परीक्षाओं का सामना किया कि अन्यजातियों के देवता और रोमी साम्राज्य आशीषों के बड़े स्रोत थे। बाहरी तौर पर, ये शक्तिशाली ताकतें थीं जिन्होंने सुरक्षा, विलासिता, और खुशहाली देने की बात कही। और इसके विपरीत, मसीही जीवन कठिन था। विश्वासियों को व्यापार में मुश्किलों का सामना करना पड़ा। उन्हें प्रशासन के द्वारा सताया गया। और कलीसिया ने उन्हें सांसारिक सुख जैसा कुछ भी देने की बात नहीं कही जिसे वे अन्यजातियों से प्राप्त कर सकते थे। इन परीक्षाओं ने एशिया माइनर की कलीसियाओं के लिए यह आसान बना दिया कि वे परमेश्वर में अपने विश्वास को त्याग दें, और इसके बदले संसार पर विश्वास करें।

इन परिस्थितियों के प्रत्युत्तर में, यूहन्ना ने अपने पाठकों से आग्रह किया कि वे विश्वास में मजबूत बने रहें। वह चाहता था कि वे अपने विश्वास में इतने दृढ़ बनें और देखें कि संसार के कार्य करने का तरीका उतना अच्छा नहीं था जितना कि दिखाई देता था, और चाहे मसीही जीवन जितना भी कठिन हो, सच्ची सुरक्षा, आनंद और खुशहाली का एकमात्र मार्ग यही है।

इसी कारण प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सांसारिक, पापमय शक्तियों और अभिलाषाओं को डरावनी, गंदी, धोखा देनेवाली, और भ्रष्ट कहती है। हाँ, शैतान का राज्य और उसके अनुयायी सुंदर वस्त्र पहनते हैं। परंतु यदि हम इसे वैसे देख सकते जैसा यह है, तो हम इसके भद्देपन के कारण इसे ठुकरा देंगे। और आज भी यही बात लागू होती है।

चाहे पाप कितना भी आकर्षक हो, और मसीह के अनुयायी होने के नाते जीवन कितना भी मुश्किल या निराशा भरा हो, महत्वपूर्ण यह है कि हम परमेश्वर में अपने विश्वास में स्थिर रहें कि परमेश्वर वह है, जो वह कहता है कि वह है, कि वह वही करेगा जो कुछ वह कहता है कि करेगा, और कि वह हमें आशीष देगा यदि हम उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यद्यपि विश्वास में स्थिरता, स्थिरता का सबसे महत्वपूर्ण प्रकार है, फिर भी प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बल देती है कि सच्चा विश्वास स्वयं को स्थिरता के अन्य प्रकारों में भी प्रकट करता है। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य में उल्लिखित दूसरे प्रकार की स्थिरता परमेश्वर के लिए अटल प्रेम है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक सब विश्वासियों को परमेश्वर के लिए अपने प्रेम को जीवित और मजबूत बनाए रखने के लिए बुलाती है। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 2:19 में प्रेम और विश्वास में अपनी स्थिरता को व्यक्त करने के लिए थुआतीरा की कलीसिया की प्रशंसा की गई है। इसके विपरीत, प्रकाशितवाक्य 2:4 में अपने पहले प्रेम को खो देने के कारण इफिसुस की कलीसिया की ताड़ना की गई है। यह असफलता इतनी बड़ी थी कि प्रभु ने उनकी दीवट को ही हटा देने की चेतावनी दी, अर्थात् उसने कलीसिया को मिटा देने की चेतावनी दी।

प्रकाशितवाक्य में उल्लिखित तीसरे प्रकार की स्थिरता दूसरों के प्रति हमारी मसीही गवाही से संबंधित है।

ऐसी कलीसियाएँ जो यूहन्ना के समय में मसीह के प्रति विश्वासयोग्य थीं, वे अनिवार्य रूप से अपने आसपास की संस्कृति के विपरीत थीं। इसलिए, यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 2 और 3 की सातों कलीसियाओं को संसार के अंधकार में चमकनेवाले दीवटों के रूप में दर्शाया। जैसे कि इफिसुस की कलीसिया को लिखा पत्र हमें सिखाता है, जब मसीही संसार के साथ समझौता कर लेते हैं, तो वे अपनी विशिष्ट गवाही को खो देते हैं, और इस कारण संसार के प्रति उनकी गवाही बिल्कुल मिट जाती है।

हम प्रकाशितवाक्य 7:10 में ऐसा ही कुछ देखते हैं, जहाँ श्वेत वस्त्र पहने हुए एक बड़ी भीड़ उस घोषणा को दोहराते हुए, जो संसार के प्रति उनकी गवाही रही थी, परमेश्वर की स्तुति करने के लिए सिंहासन के चारों ओर एकत्र थी : "उद्धार हमारे परमेश्वर का है।" उद्धार कैसर या किसी अन्य स्रोत से नहीं मिल सकता, यह केवल यीशु मसीह, अर्थात् परमेश्वर के मेम्ने के कार्य के द्वारा ही मिल सकता है। और इसी एकमात्र सच्चाई ने विश्वासियों की गवाही को अति महत्वपूर्ण बना दिया। अविश्वासियों को यह देखना था कि उनकी आराधना झूठी और भटकी हुई थी, और केवल कलीसिया के पास ही जीवन और आशा का सच्चा संदेश था।

वह चौथा तरीका जिसमें प्रकाशितवाक्य मसीहियों को स्थिर बने रहने के लिए बुलाती है, वह है नैतिक पवित्रता।

नैतिक शुद्धता के विषय में उपदेश कलीसियाओं को लिखे सातों पत्रों में बार-बार पाए जाते हैं। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 2:12-17 में यीशु ने पिरगमुन की कलीसिया को ऐसे लोगों को स्वीकार करने के कारण डांटा जिन्होंने न केवल लैंगिक व्यभिचार किया था बल्कि दूसरों को भी अपने इन कार्यों शामिल होने के लिए उकसाया था। और प्रकाशितवाक्य 3:14-22 में यीशु ने लौदीकिया की कलीसिया को उसकी सांसारिकता के लिए डांटा क्योंकि उन्होंने मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता से अधिक धन-संपत्ति और आराम को महत्व दिया।

वह पाँचवें प्रकार की स्थिरता जिसका हम उल्लेख करेंगे, वह है धर्मशिक्षा में स्थिर रहना।

> हर जगह ऐसे बहुत से लोग हैं जो मानते हैं कि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं। परंतु यदि परमेश्वर के बारे में उनका विचार बिल्कुल गलत है, यदि यह सच्चे परमेश्वर के बारे में नहीं है, तो जितना अधिक वे परमेश्वर की "सेवा" करेंगे, उतना अधिक परमेश्वर से दूर होते जाएँगे। धर्मशिक्षा सेवा का आधार है, उस वृक्ष के समान जिसकी जड़ें भूमि के अंदर होती हैं और दिखाई नहीं देती हैं। बहुत से लोग इसकी शाखाओं और फल को देखते हैं, परंतु वे यह नहीं देखते कि कैसे इसकी जड़ें उस फल को प्रभावित करती हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> बहुत से खोखले विश्वासी आज धर्मशिक्षा के विषयों पर ध्यान नहीं देते, परंतु गंभीर मसीही जानते हैं कि धर्मशिक्षा सारी बातों का आधार है — यह बहुत ही महत्वपूर्ण है।
>
> **रेव्ह. डॉ. स्टीफन टोंग, अनुवाद**

प्रकाशितवाक्य नियमित रूप से विश्वासियों को बुलाता है कि वे सच्ची धर्मशिक्षा को बनाए रखें, और सांसारिक विचारों के साथ समझौता न करें। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 2:1-7 में यीशु ने सच्ची मसीही शिक्षाओं के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने और सच्चे तथा झूठे प्रेरितों के बीच अंतर करने के लिए इफिसुस की कलीसिया की प्रशंसा की। और प्रकाशितवाक्य 2:20-23 में धर्मशिक्षा-संबंधी समझौतों के कारण थुआतीरा की कलीसिया की ताड़ना हुई, विशेषकर झूठी भविष्यवक्ता ईजबेल की सुनने के कारण।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक विस्तृत रूपों में कलीसिया को स्थिर बने रहने की बुलाहट देती है। परंतु ऐसे मसीही जो इन क्षेत्रों में चुनौती प्राप्त करते हैं, उन्हें हमेशा यह पता नहीं होता कि परीक्षाओं, प्रलोभनों और दुःख पर विजय प्राप्त करने के लिए क्या करें।

धन्यवाद हो कि प्रकाशितवाक्य हमें केवल यह नहीं सिखाता कि हमें स्थिर बने रहना है। यह हमें इस विषय पर भी व्यावहारिक निर्देश भी देता है कि स्थिर कैसे बने रहें।

> मेरे विचार से परीक्षाओं का सामना करते समय हम व्यावहारिक कदम उठा सकते हैं — यह रुचिकर है, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जो कि मसीहियों के लिए वास्तव में अव्यवस्थित ऐतिहासिक या अन्य प्रकार की परिस्थितियों से भरी हुई है, उसमें व्यावहारिक कदम ठीक वैसे ही हैं जैसे कि शेष पवित्रशास्त्र में हैं, कि परमेश्वर के लोगों को विश्वासयोग्यता, आज्ञाकारिता, जो कुछ वे जानते हैं उसके प्रति, जो कुछ उन पर प्रकट किया गया है उसके प्रति बुलाता है। उन्हें एक साथ रहने के लिए, एक साथ विश्वास करने के लिए, एक साथ आराधना करने के लिए समाज में बुलाया गया है। उन्हें एक साथ गवाही देने के लिए बुलाया गया है। संदर्भ चाहे जो भी हो, कितना भी सताव हो, हमारी स्थिरता इस बात पर केंद्रित होती है कि परमेश्वर हमसे हर समय क्या चाहता है, चाहे परिस्थितियाँ अच्छी हों या बुरी, और पवित्र जीवन जीना यही है। और इसलिए मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक और अन्य पुस्तकों को बहुत ही उत्साहवर्धक पाता हूँ; यह पवित्र जीवन जीने के लिए चुनौती देती हैं, परंतु यह कहना भी उत्साहवर्धक होगा कि यह असंभव कार्य नहीं है। सबसे मुश्किल परिस्थितियों में भी परमेश्वर के लोगों को अनुग्रह के माध्यम को बनाए रखना है और मसीह के नाम को लेते रहना है, और एक ऐसा जीवन जीना है जहाँ बुराई के प्रति उनके प्रत्युत्तर उन लोगों के प्रत्युत्तरों से बहुत ही अलग हों जो मसीह में नहीं हैं।
>
> **— डॉ. विलियम ऊरी**

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक छल के उस परदे को उठा देती है जिसे परमेश्वर का विरोध करनेवाले पापपूर्ण मानवीय प्रशासनों ने रखा था। यह परमेश्वर के राज्य और मसीह की सामर्थ्य की सुंदरता और आश्चर्य को प्रकट करती है। यह हमें दिखाती है कि परमेश्वर अपने लोगों से प्रेम करता है और अपने महिमामय राज्य में उन्हें आशीष देने की प्रतिज्ञा करता है। और यह हमें भविष्य की उन आशीषों का आश्वासन देती है जिन्हें हम

नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में प्राप्त करेंगे, यदि हम अंत तक विश्वासयोग्यता के साथ स्थिर बने रहते हैं। संक्षेप में, यह हमें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने का, और हमारे जीवनभर, पूरे इतिहास में विश्वासयोग्यता में स्थिर बने रहने का प्रत्येक कारण देती है, जब तक कि यीशु सब वस्तुओं को नया बनाने के लिए वापस नहीं आता।

क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद मृत्यु यीशु को अपने अधिकार में नहीं रख सकी, और तीसरे दिन वह मृतकों में जी उठा। ऐसा ही कुछ संसार की वर्तमान परिस्थितियों के विषय में सही है। बहुत सी सांसारिक शक्तियाँ और समूह परमेश्वर का विरोध करते हैं, और परमेश्वर के बहुत से लोग दुःख उठाते हैं। यह जीवन को वास्तव में निराशाजनक बना सकता है। परंतु हमें यह याद रखना है कि जब जीवन बहुत ही निराशाजनक भी दिखाई दे, तो भी सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है, और अब भी उसके मन में हमारे लिए सर्वोत्तम योजनाएँ हैं। और चाहे कुछ भी हो, वह अपनी प्रतिज्ञाओं से भलाई ही उत्पन्न करेगा। हमारे वर्तमान दुःख उस महिमा के सामने कुछ भी नहीं है जिसे हम तब प्राप्त करेंगे जब यीशु वापस आएगा। और इससे हमें प्रेरणा मिलनी चाहिए कि हम अपने विश्वास और समर्पण में अटल खड़े हों, प्रेम में दृढ़ बनें, अपनी गवाही को बनाए रखें, अपनी धर्मशिक्षा और अपने जीवन की शुद्धता को सुरक्षित रखें। क्योंकि जिस प्रकार यीशु की मृत्यु के अंधकार के बाद उसके पुनरुत्थान की ज्योति आई, वैसे ही हमारी वर्तमान कठिनाइयों के बाद अंततः उसके पुनरागमन की ज्योति और उसके राज्य की पूर्णता आएगी।

अब जबकि हमने देख लिया है कि कैसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक परमेश्वर के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता में स्थिर बने रहने के लिए उत्साहित करती है, इसलिए आइए अब देखें कि यह आराधना में हमारी विश्वासयोग्यता को व्यक्त करने में कैसे उत्साहित करती है।

आराधना

इस तथ्य के बावजूद भी कि यूहन्ना के मूल पाठक बड़ा सताव सह रहे थे, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में आराधना पर काफी बल दिया गया है। प्रकाशितवाक्य 4 और 5 स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में आराधना के एक अद्‌भुत दृश्य का वर्णन करते हैं, जिसमें चौबीस प्राचीन परमेश्वर के सिंहासन के चारों ओर सिंहासनों पर बैठे हैं, और चार जीवित प्राणी सिंहासन कक्ष में उड़ रहे हैं और परमेश्वर की स्तुति कर रहे हैं। आराधना के ऐसे ही दृश्य प्रकाशितवाक्य के 22 अध्यायों के आधे से भी अधिक हिस्से में पाए जाते हैं।

जबकि यह हमें पहले पहल चकित करनेवाला हो, फिर भी प्रकाशितवाक्य कष्टों और आराधना के बीच के संबंध को स्पष्ट करता है। हमारी वर्तमान परिस्थितियाँ चाहे जैसी भी हों, निराशा के समय में भी परमेश्वर सिद्ध, पवित्र और भला बना रहता है। और वह हमारी संपूर्ण भलाई के लिए ही सारी बातों को उत्पन्न कर रहा है, ताकि आने वाले युग में वह हमें मसीह में हमारी पूरी मीरास के साथ आशीषित करे।

जबकि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमें परमेश्वर की आराधना करने के कई कारण प्रदान करती है, फिर भी इस अध्याय में हम ऐसे तीन विचारों पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिन्हें प्रकाशितवाक्य 5 में चौबीस प्राचीनों के द्वारा परमेश्वर की स्तुति में सारगर्भित किया गया है।

सुनिए प्रकाशितवाक्य 5:9-10 में प्रचीनों ने क्या घोषणा की है :

> क्योंकि तूने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है, और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं (प्रकाशितवाक्य 5:9-10)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

प्राचीनों ने परमेश्वर की स्तुति करने के कम से कम तीन कारणों का उल्लेख किया। पहला, मसीह ने लोगों को प्रत्येक कुल और भाषा और लोगों और जाति से मोल लिया या छुड़ाया है। दूसरा, मसीह ने इन छुड़ाए हुए लोगों को एक राज्य और याजकों के रूप में नियुक्त किया। और तीसरा, उसने यह सुनिश्चित किया है कि भविष्य में वे पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

आराधना में व्यक्त विश्वासयोग्यता के विषय पर हमारी खोज प्रकाशितवाक्य 5:9-10 के इस तीन-रूपीय महत्व के समानांतर होगी।

पहला, हम देखेंगे कि अतीत में मसीह द्वारा किया गया छुटकारे का कार्य परमेश्वर को आराधना के योग्य बनाता है।

दूसरा, हम परमेश्वर की आराधना करने पर ध्यान देंगे क्योंकि उसने हमें याजकों के राज्य के रूप में नियुक्त करके वर्तमान में सम्मान दिया है।

और तीसरा, हम देखेंगे कि उन आशीषों के कारण वह हमारी आराधना के योग्य है जिन्हें हम भविष्य में तब प्राप्त करेंगे जब हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर शासन करेंगे। आइए पहले मसीह के द्वारा अतीत में किए गए छुटकारे को देखें।

अतीत का छुटकारा

प्रकाशितवाक्य बार-बार यह दर्शाता है कि परमेश्वर अपनी संपूर्ण सृष्टि के द्वारा आराधना प्राप्त करने के योग्य है। और यह हमें ऐसी सुंदर तस्वीरें प्रदान करता है कि स्वर्ग में पवित्र लोग कैसे आराधना करते हैं। और परमेश्वर की आराधना करने का जो एक कारण प्रकाशितवाक्य हमें देता है, वह है उद्धार का वह कार्य जो मसीह ने हमारे लिए किया है।

प्रकाशितवाक्य 14:1-4 हमारे समक्ष छुटकारे की एक ऐसी तस्वीर प्रस्तुत करता है जिसे हमने मसीह में पहले से ही प्राप्त कर लिया है। पद 1 में यूहन्ना ने विश्वासियों का वर्णन ऐसे किया कि जिनके माथे पर मेम्ने का नाम और पिता का नाम लिखा हुआ था। पद 4 में यूहन्ना ने लिखा कि विश्वासियों को लोगों में से मोल लिया गया था, और कि हम परमेश्वर और मेम्ने के सामने भेंट के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। और इस महान् उद्धार के प्रत्युत्तर में विश्वासियों ने नए गीत के साथ अपने आभार को व्यक्त करते हुए परमेश्वर की आराधना और स्तुति की।

हर एक विश्वासी के पास उस उद्धार के प्रति समान प्रत्युत्तर होना चाहिए जो हमने प्राप्त किया है। हम सब को मसीह ने मोल लिया है, और हम सब को परमेश्वर और मेम्ने के सामने एक भेंट के रूप में प्रस्तुत किया गया है। और हम सब को आनंद और गीतों के साथ परमेश्वर और मसीह की आराधना करते हुए धन्यवाद और स्तुति में प्रत्युत्तर देना चाहिए।

जब हम कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो हमारे लिए परमेश्वर की भलाइयों पर संदेह करना, और उन भले दानों को भूल जाना आसान हो जाता है जो उसने हमें हमारे उद्धार में दिए हैं — जैसे कि क्षमा, हमारे सृष्टिकर्ता और प्रभु के साथ एक पुनर्स्थापित संबंध, और अनंत जीवन के दान।

हमें अक्सर यह याद करने की आवश्यकता है कि जो छुटकारा मसीह ने हमारे लिए पहले ही पूरा कर लिया है और उसे हम पर लागू कर दिया है, वह उसे हमारी आराधना के योग्य बनाता है, फिर चाहे हमारी परिस्थितियाँ कैसी भी हों। परमेश्वर ने हमसे इतना प्रेम किया कि वह हमारे पापों के लिए भयंकर कष्टों और सतावों को सहने, तथा क्रूस पर अपनी जान देने के लिए इस पापपूर्ण संसार में आ गया। इस संसार के किसी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

और कष्ट या दुःख की तुलना उस दुःख के साथ नहीं की जा सकती जो मसीह ने हमारे लिए सहा है। और यह उसको हर प्रकार की आराधना, स्तुति और धन्यवाद के योग्य बनाता है।

अब जबकि हमने देख लिया है कि कैसे मसीह के द्वारा अतीत में किया गया छुटकारे का कार्य हमें विश्वासयोग्य आराधना के लिए प्रेरित करता है, इसलिए आइए हम उस सम्मान की ओर मुड़ें जो परमेश्वर ने हमें अपने याजकों का राज्य बनाने के द्वारा वर्तमान में दिया है।

वर्तमान का सम्मान

वर्तमान में, परमेश्वर अपने स्वर्गीय मंदिर में अपने सिंहासन से राज्य करता है। और वह पृथ्वी के अपने लोगों को अपना याजकों का राज्य बनने के लिए बुलाता है।

पुराने नियम में राजाओं और याजकों को बड़ा सम्मान दिया जाता था क्योंकि उन्हें परमेश्वर की ओर से इसलिए चुना गया था कि वे वाचाई लोगों के साथ उसे उसके संबंध में प्रस्तुत करें। परंतु उन्हें इन सम्मानजनक कार्यों में सफल होने के लिए अनुमति तब तक ही दी गई थी जब तक वे अपने महान सुजरेन के रूप में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहते थे। हम इसे 1 राजाओं 3:13-14, यिर्मयाह 34:4-5, और दानिय्येल 4:34-27 जैसे स्थानों पर पुराने नियम के राजाओं के संदर्भ में देखते हैं। और हम 2 इतिहास 26:18, और विलापगीत 4:12-16 जैसे स्थानों पर याजकीय विश्वासयोग्यता और सम्मान के बीच संबंध को देखते हैं।

यद्यपि पुराने नियम में कुछ चुनिंदा लोगों को ही राजाओं और याजकों के रूप में चुना गया, परंतु फिर भी पुराने नियम ने उस दिन की अपेक्षा की जब परमेश्वर के सब विश्वासयोग्य लोग इस पृथ्वी पर राजा और याजक दोनों होंगे।

जैसा कि निर्गमन 19:5-6 में परमेश्वर ने इस्राएल से कहा :

> इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे (निर्गमन 19:5-6)।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अनुसार, पुराने नियम ने जिस दिन को पहले से देखा था वह यहाँ है। कलीसिया अब याजकों का राज्य है जो पृथ्वी पर शासन करता है। हम इसे स्पष्ट रूप से प्रकाशितवाक्य 5:9-10 और 20:6 में देखते हैं, और इसके निहितार्थ अन्य कई अनुच्छेदों में भी पाए जाते हैं।

> परमेश्वर ने निर्गमन 19 में इस्राएलियों से कहा था कि परमेश्वर ने उन्हें याजकों के राज्य, अर्थात् राजकीय याजकों के रूप में चुना है। और निर्गमन 19 की भाषाशैली का प्रयोग पतरस ने नए नियम में कलीसिया को दर्शाने के लिए किया है। और इसलिए न केवल संपूर्ण प्राचीन इस्राएल के प्रति बल्कि संपूर्ण मसीहियों के प्रति हमें इस दृष्टिकोण को रखने की आवश्यकता है कि हम उसके राजकीय याजक हैं, चुनी हुई प्रजा हैं, राजकीय याजकों का समूह हैं। अब मैं जानता हूँ कि कई पहलूओं से यह थोड़ा विचित्र लगता है, क्योंकि जब हम याजकों के बारे में सोचते हैं, तो हमारे विचार में वही आता है जो थोड़े-बहुत कार्य याजक करते हैं; वे बलिदान चढ़ाते हैं, वे प्रार्थना करते हैं, कभी-कभी वे गीत गाते हैं, शायद तुरही भी फूँकते हैं और गायक-समूह में होते हैं या ऐसे ही कुछ कार्य करते हैं। परंतु वास्तविकता में, बाइबल यह कह रही है कि पृथ्वी पर आरंभ से लेकर अंत तक परमेश्वर द्वारा स्थापित प्रत्येक वैधानिक कार्य उनके लिए

> राजकीय याजकों का कार्य रहा है जो उसकी सेवा करते हैं। ऐसा नहीं है कि हमारे पास बस कुछ कार्य हैं जिन्हें हम करते हैं जो परमेश्वर के प्रति सेवकाइयाँ हैं — उसकी आराधना की सेवकाई — और फिर अन्य कार्य जिन्हें हम स्वयं के लिए करते हैं या फिर बिना किसी भले कारण के करते हैं। इसकी अपेक्षा, मसीहियों के रूप में वह प्रत्येक कार्य जो हम करते हैं उसे पूरे मन के साथ ऐसे किया जाना चाहिए जैसे कि हम वह प्रभु के लिए कर रहे हों, फिर चाहे यह आपका छः दिनों का कार्य हो, चाहे नींद हो, या फिर चाहे अपने बच्चों का पालन-पोषण हो। यह चाहे कुछ भी हो, यह राजकीय याजक का कार्य है क्योंकि हमारा कार्य आने वाले एक नए संसार की प्रतीक्षा में परमेश्वर की पवित्रता को पूरे संसार में फैलाना है, जहाँ बचा हुआ प्रत्येक जन इस अद्भुत रूप से शुद्ध, पवित्र और साफ़ पृथ्वी पर रहेगा, और वे परमेश्वर के राजकीय याजकों के रूप में सदा-सर्वदा उसकी सेवा करेंगे।
>
> **— डॉ. रिर्चड, एल. प्रैट, जूनियर**

निस्संदेह इस सच्चाई के बहुत से निहितार्थ हैं। उदाहरण के लिए, मसीही लोग पृथ्वी पर परमेश्वर के राजदूत हैं। हमें उसकी और अन्य लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया गया है। हमें पृथ्वी का संचालन दायित्व के साथ करने को कहा गया है, इत्यादि। परंतु हमारे अध्याय के इस भाग में जिस अर्थ पर हम ध्यान देंगे वह यह है कि इस सम्मान से हम आराधना करने के लिए प्रेरित हों।

उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 5:8-14 में स्वर्गीय न्याय कक्ष में आराधना का एक सुंदर दृश्य है। इस दृश्य के भाग के रूप में, चार जीवित प्राणी और चौबीस प्राचीन यीशु की जो मेम्ना है, वीणाओं, भजनों और सुगंधित बलिदानों के साथ आराधना और स्तुति करते हैं।

सुनिए उन्होंने प्रकाशितवाक्य 5:10 में परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के बारे में क्या कहा :

> और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं (प्रकाशितवाक्य 5:10)।

यीशु के आराधना के योग्य होने का एक महत्वपूर्ण कारण यह है कि उसने वर्तमान में अपने लोगों को ऐसे याजकों और राजाओं के रूप में सेवा करने लिए नियुक्त करने के द्वारा सम्मान दिया है जो पृथ्वी पर राज्य करेंगे।

हम ऐसा ही कुछ प्रकाशितवाक्य 4:10-11 में देखते हैं। इस अनुच्छेद में, स्वर्ग के प्राचीनों ने यीशु के सामने दंडवत करने, उसके चरणों पर अपने मुकुटों को रखने, और उसकी स्तुति करने के द्वारा उन्हें दिए गए सम्मान और राजकीय अधिकार का प्रत्युत्तर दिया।

एक और उदाहरण प्रकशितवाक्य 7 में पाया जाता है, जहाँ असंख्य विश्वासियों पर परमेश्वर के सेवक होने के रूप में छाप लगाई गई है। उनको दिए गए अनुग्रह और सम्मान के प्रति उनका प्रत्युत्तर परमेश्वर की भलाई, दया और सामर्थ्य के लिए प्रभु की स्तुति करना है।

और प्रकाशितवाक्य 1:5-6 में स्वयं प्रेरित यूहन्ना ने हमारे समक्ष इस व्यवहार को प्रकट किया है। सुनिए यहाँ क्या कहा गया है :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> उसने हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे (प्रकाशितवाक्य 1:5-6)।

इन पदों में यूहन्ना ने दर्शाया कि सब समयों की कलीसिया को हमारे द्वारा प्राप्त सम्मान का प्रत्युत्तर उस प्रभु की आराधना करके देना चाहिए जिसने हमें अपने याजकों के राज्य के रूप में आशीषित किया है।

> परमेश्वर की सेवा करने या परमेश्वर को धन्य कहने के बारे में बात करना तब विचित्र लगता हो जब हम यह महसूस करते हैं कि वह स्वतंत्र है, उसके पास कोई भी अधूरी इच्छा नहीं है; वह पूरी तरह से आत्म-निर्भर है। परंतु हमारे साथ अपने संबंध में, हम उसे इस रूप में आनंद दे सकते हैं कि हम कैसे उसकी आज्ञा मानते हैं या उसकी आराधना करते हैं, या विश्वासयोग्यता के साथ अपना जीवन जीते हैं। और परमेश्वर के प्रति प्रतिदिन की विश्वासयोग्यता, प्रतिदिन की आज्ञाकारिता और आराधना वास्तव में परमेश्वर को धन्य कहती है और हमारे हृदयों को प्रसन्न करती है। और एक मसीही के रूप में जीने की वास्तव में यही एक प्रमुख प्रेरणा है। ऐसा नहीं है कि हमारे साथ बुरी घटनाएँ नहीं घटतीं या फिर कि परमेश्वर हम पर बहुत क्रोधित हो जाएगा, बल्कि यह कि हम अपने जीवन जीने के तरीके से अपने सृष्टिकर्ता को हृदय से आनंदित कर सकते हैं।
>
> **— डॉ. के. एरिक थोनेस**

हम कई बार भूल जाते हैं कि परमेश्वर के याजकों के रूप में विश्वासी वास्तव में स्वर्ग में प्रभु की सेवा करते हैं। अर्थात् हम ऐसी सेवाएँ करते हैं जो स्वर्गीय मंदिर को बनाए रखती हैं, और इसके प्रभु को आनंदित करती हैं। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 5:8 हमें आश्वस्त करता है कि पवित्र लोगों की प्रार्थना परमेश्वर के स्वर्गीय मंदिर में धूप से भरे सोने के कटोरे हैं। और प्रकाशितवाक्य 8:3-5 में ये प्रार्थनाएँ परमेश्वर के सामने जाती हैं, और पृथ्वी पर न्याय भेजने के द्वारा इनका प्रत्युत्तर देता है।

परमेश्वर के लोगों के पास आज उसके याजकों का राज्य बनने का सम्मान प्राप्त है। परमेश्वर हमें अपने राज्य में लेकर आया है, और उसने हमें पूरे संसार में उसके राज्य को फैलाने का कार्य सौंपा है। और उसके याजकों के रूप में हमारे पास उसके स्वर्गीय मंदिर में उसकी सेवा करने का सम्मान भी प्राप्त है। इसके बारे में सोचें — हम प्रत्यक्ष रूप में पूरे ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता और शासक के लिए कार्य करते हैं। उसने हमें अपनी सृष्टि के ऊपर अधिकार दिया है, और वह बड़े ध्यान से हमारी बात सुनता है जब हम उसकी सेवा करते हैं और उससे प्रार्थना करते हैं। वह हमारी प्रार्थनाओं को भी सुनता है, और उनका प्रयोग ऐसे माध्यम के रूप में करता है जिसके द्वारा वह अपने विश्वासयोग्य लोगों को आशीष देता है और उन्हें दंड देता है जो उसके राज्य का विरोध करते हैं। और हमें इस महान सम्मान का प्रत्युत्तर कैसे देना चाहिए? अपनी आभारपूर्ण आज्ञाकारिता और सच्ची आराधना के द्वारा।

अतीत में मसीह के द्वारा किए गए छुटकारे के कार्य और वर्तमान के हमारे सम्मान को देख लेने के बाद, हम अब यह देखने के लिए तैयार हैं कि परमेश्वर उन आशीषों के कारण हमारी विश्वासयोग्य आराधना को प्राप्त करने के योग्य है जो उसने हमें भविष्य में देने की प्रतिज्ञा की है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

भविष्य की आशीषें

प्रकाशिवाक्य की पुस्तक कलीसिया को उन बड़ी आशीषों के कारण परमेश्वर की आराधना करने के लिए बुलाती है जो वह हमें न्याय के दिन देगा जब हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर मसीह के साथ अनंत राज्य को आरंभ करेंगे। परमेश्वर की आराधना करने के लिए हमें उत्साहित करने का इसका एक तरीका हमारे लिए ऐसे उदाहरणों को देना है जिनका हम अनुसरण करें।

प्रकाशितवाक्य 11:16-18 में स्वर्ग में प्राचीनों के द्वारा दिए गए उदाहरण पर ध्यान दें :

> तब चौबीसों प्राचीन जो परमेश्वर के सामने अपने अपने सिंहासन पर बैठे थे, मुँह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत् करके यह कहने लगे, "हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, जो है और जो था, हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तू ने अपनी बड़ी सामर्थ्य को काम में लाकर राज्य किया है . . . और वह समय आ पहुँचा है कि . . . तेरे दास भविष्यद्वक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिगाड़नेवाले नष्ट किए जाएँ। (प्रकाशितवाक्य 11:16-18)

इस दर्शन में, यूहन्ना ने भविष्य के न्याय के दिन को देखा। उस दिन, परमेश्वर के सारे विश्वासयोग्य लोग अनंत पुरस्कारों को प्राप्त करेंगे, और परमेश्वर के सारे शत्रु अनंत विनाश के लिए भेज दिए जाएँगे। इस दृश्य के भाग के रूप में, यूहन्ना ने प्राचीनों को इसलिए परमेश्वर की आराधना करते हुए देखा क्योंकि उसने उन्हें पुरस्कारों के साथ और उनके शत्रुओं को उनसे दूर करके आशीषित किया था। इस उदाहरण के साथ, यूहन्ना के दिनों की कलीसियाओं ने समझ लिया होगा कि परमेश्वर वर्तमान में भी हमारी आराधना के योग्य है, क्योंकि भविष्य की इन्हीं आशीषों की प्रतिज्ञा हमसे की गई है।

एक और उदाहरण प्रकाशितवाक्य 7:9-10 में पाया जाता है, जहाँ हम यह विवरण पाते हैं :

> हर एक जाति और कुल और लोग और भाषा में से एक ऐसी बड़ी भीड़, जिसे कोई गिन नहीं सकता था, श्वेत वस्त्र पहिने और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ लिये हुए सिंहासन के सामने और मेम्ने के सामने खड़ी है। और बड़े शब्द से पुकारकर कहती है, "उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का, जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जय कार हो!" (प्रकाशितवाक्य 7:9-10)

इस अनुच्छेद में जिस भीड़ का वर्णन यूहन्ना ने किया वह श्वेत वस्त्र पहने हुए थी और उनके हाथों में खजूर की डालियाँ थीं। प्रकाशितवाक्य 7:14-17 के अनुसार, श्वेत वस्त्र उन आशीषों के प्रतीक थे जो उन्होंने प्राप्त की थीं। उन्हें महाक्लेश में से निकाल कर लाया गया था, मसीह के लहू के द्वारा और उनके पाप क्षमा किए गए थे।

यही नहीं, उन्हें परमेश्वर के अनंत राज्य में प्रवेश दिया गया था, और उन्होंने अनंत पुरस्कार को प्राप्त किया था। और उन्होंने परमेश्वर के प्रति कैसे प्रत्युत्तर दिया? उसकी आराधना करने के द्वारा। और उनके उदाहरण ने यूहन्ना के मूल पाठकों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित किया होगा, क्योंकि यही आशीषें उन्हें भी दी जाने वाली थीं। और यही हर सदी के विश्वासियों पर भी लागू होता रहा है।

और कुछ ऐसा ही उन खजूर की डालियों के साथ भी था जो उस भीड़ के हाथों में थीं। लैव्यव्यवस्था 23:40 के अनुसार, खजूर की डालियों का प्रयोग उस अंतिम उद्धार को दर्शाने के लिए झोपड़ियों के पर्व के

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

समय निरंतर किया जाता था जो प्रभु लेकर आएगा। और जब यीशु ने यूहन्ना 12 में अपने विजय उत्सव के दौरान यरूशलेम में प्रवेश किया, तो एक विवरण हमें यह दिया गया है कि भीड़ ने उसका स्वागत खजूर की डालियों के साथ किया, जिसने उनकी इस धारणा को दर्शाया कि वह परमेश्वर के मसीहा-संबंधी राज्य को ला रहा था। अतः यूहन्ना के दर्शन में भीड़ के हाथों में खजूर की डालियों ने शायद यह दर्शाया कि लोगों ने परमेश्वर के राज्य की भावी आशीषों को प्राप्त कर लिया था। और निस्संदेह उन्होंने उसकी आराधना करने के द्वारा इन आशीषों के लिए अपने आभार को व्यक्त किया जिसने उन्हें आशीष दी थी।

यीशु पहले से ही परमेश्वर के शत्रुओं पर जयवंत है। और प्रत्येक विश्वासी भविष्य में बड़ी आशीषों की अपेक्षा कर सकता है, मरने के बाद स्वर्ग में, और यीशु के पुनरागमन पर इस नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर। और यह हम सबको हमारे जयवंत परमेश्वर की स्तुति और आराधना करने का एक कारण देता है।

> जब हम यह सोचते हैं कि परमेश्वर की आराधना करने का क्या अर्थ है, तो अक्सर हम रचित क्रम को देखते हैं, हम मसीह के क्रूस के प्रति अपनी समझ और हमें मिली पापों की क्षमा को देखते हैं, और यह भी कि हमें उसकी संतान के रूप में अपनाया गया है। हम इन सब को अपनी वर्तमान संपत्ति के रूप में देखते हैं। हम भजन 19 में दाऊद के साथ कह सकते हैं, "आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रकट कर रहा है।" हम अपने चारों ओर सुंदरता को देखते हैं; हम इन बातों के लिए आभारी हैं। हम मसीह के पूरे किए कार्य और परमेश्वर के पुत्रों के रूप में, और क्षमा प्राप्त लोगों के रूप में हमारे वर्तमान अधिकारों के बारे में पवित्रशास्त्र की भाषा को देखते हैं, और हम इसके लिए परमेश्वर की स्तुति करते हैं। परंतु एक बात जो हमें पवित्रशास्त्र में मिलती है, वह यह है कि हमें भविष्य में मिलने वाली आशीषों के प्रति पूरी तरह से सुरक्षित और निश्चित होना है। वास्तव में, मेरे विचार से पवित्रशास्त्र दर्शाता है कि जिसकी प्रतिज्ञा हम से भविष्य में की गई है वे बातें उन सबसे कहीं अधिक और महिमामय हैं जो हमारे पास वर्तमान में हैं।
>
> **— डॉ. थॉमस जे. नैटल्स**

> परमेश्वर उन बातों के लिए भी आराधना के योग्य है जो वास्तव में अभी तक हमारे जीवनों में घटित नहीं हुई हैं क्योंकि हम आश्वस्त हैं कि वे अवश्य होंगी। मसीही विश्वास परमेश्वर की सर्वोच्च भलाई और सामर्थ्य में आशा और भरोसा रखने का विश्वास है, और इसलिए जब वह किसी बात की प्रतिज्ञा करता है तो हम उसे इस आश्वासन के साथ स्तुति और आराधना दे सकते हैं कि वह बात वास्तव में पूरी होगी। हम उन सब बातों के लिए परमेश्वर की आराधना कर सकते हैं जो उसने की हैं, जो वह कर रहा है, और जो वह करेगा।
>
> **— डॉ. के. एरिक थोनेस**

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता के विषय को कई रूपों में व्यक्त किया गया है। परंतु जैसा कि हम देख चुके हैं, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आराधना और स्थिरता को ऐसे दो सर्वोत्तम तरीकों के रूप में दर्शाती है जिनके द्वारा हम वर्तमान संसार में परमेश्वर के प्रति हमारी विश्वासयोग्यता को व्यक्त कर सकते हैं। अब हमेशा ऐसा करना आसान नहीं होता। वास्तव में, जितना अधिक हम दुःख

उठाते हैं, स्थिर रहना उतना ही कठिन हो जाता है, और हम आराधना में भी प्रेरणा की कमी को महसूस करते हैं। परंतु यूहन्ना ने यह स्पष्ट कर दिया कि बुरे से बुरे समयों में भी परमेश्वर अपने लोगों को उसके प्रति विश्वासयोग्य बने रहने के लिए आवश्यक सामर्थ्य देता है। और यूहन्ना ने यह भी दर्शाया कि चाहे हमारी वर्तमान परिस्थितियाँ कैसी भी हों, हमारे पास परमेश्वर की आराधना करने के बहुत से कारण हैं, क्योंकि हमने अतीत में उद्धार प्राप्त किया है, और वर्तमान में हमारे पास सम्मान है, और भविष्य में हम महिमामय आशीषों को प्राप्त करेंगे।

अब जबकि हमने परमेश्वर के राजत्व और कृपा की खोज कर ली है, और उस विश्वासयोग्य को भी देख लिया है जिसकी वह हमसे मांग करता है, इसलिए अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि प्रकाशितवाक्य परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता और अविश्वासयोग्यता के परिणामों के विषय में क्या कहती है।

परिणाम

इस खंड में, हम उन परिणामों पर ध्यान देंगे जिन्हें मनुष्यजाति तब प्राप्त करेगी जब मसीह परमेश्वर के राज्य को उसकी पूर्णता में लाने के लिए वापस आएगा। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक आज्ञाकारिता के लिए बहुत से पुरस्कारों और आशीषों, तथा अवज्ञाकारिता के लिए बहुत से दंडों और श्रापों का उल्लेख करती है। और इनमें से कईयों का अनुभव वर्तमान युग में किया जा सकता है। परंतु हमारे अध्याय में यहाँ हम उन परिणामों पर ही ध्यान देने वाले हैं जो मसीह के पुनरागमन के समय प्रकट होंगे।

सभी सुसमाचारिक मसीही उस समय की अपेक्षा करते हैं जब मसीह धर्मी और अधर्मी दोनों का अंतिम न्याय करने के लिए वापस आएगा। पहले के एक अध्याय में, हमने यह सुझाव दिया था कि इस अंतिम न्याय की घोषणा यूहन्ना द्वारा प्राप्त चार दर्शनों में न्याय के चक्रों में की गई है। यद्यपि हर कोई इस दृष्टिकोण से सहमत नहीं होता, फिर भी अधिकतर मसीही अभी भी न्याय की इस स्वाभाविक प्रकृति की पुष्टि करते हैं जिसका वर्णन यूहन्ना ने किया है।

अंतिम न्याय उस वाचा का आवश्यक परिणाम है जो परमेश्वर ने अपने वासल राजा के रूप में मसीह के साथ बाँधी है। मसीह स्वर्ग और पृथ्वी को नया करने के लिए राजा के रूप में शासन कर रहा है, ताकि सृष्टि पूरी तरह से परमेश्वर की महिमा को प्रकट करे। ऐसा होने के लिए, भलाई का प्रतिफल मिलना और उसका आशीषित होना जरूरी है, जबकि परमेश्वर के राज्य के विरुद्ध की जानेवाली दुष्टता और विद्रोह को दंडित किया जाना और उसका नाश किया जाना जरूरी है।

हम परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता और अविश्वासयोग्यता के परिणामों की खोज दो भागों में करेंगे। पहला, हम उन अंतिम श्रापों को देखेंगे जो उन लोगों पर आ पड़ेंगे जो परमेश्वर के प्रति अविश्वासयोग्य रहे हैं। और दूसरा, हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की अंतिम आशीषों पर विचार करेंगे जो उन लोगों को दी जाएँगी जो विश्वासयोग्य रहे हैं। आइए पहले हम परमेश्वर के शत्रुओं के विरुद्ध आनेवाले अंतिम श्रापों को देखें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अंतिम श्राप

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ऐसे कम से कम तीन तत्वों को दर्शाती है जो परमेश्वर के शत्रुओं के विरूद्ध अंतिम श्रापों में शामिल किए जाएँगे। सबसे पहला उल्लेख हम अजगर, पशु और झूठे भविष्यवक्ता के विनाश का करेंगे।

अजगर और उसके अनुयायियों ने पूरे मानवीय इतिहास में परमेश्वर का विरोध किया है। शैतान अदन की वाटिका में था, और उसने हव्वा को भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने की परीक्षा में डाला। और तब से उसकी सेनाओं ने परमेश्वर और उसके राज्य को हराने का प्रयास किया है। परंतु जब यीशु वापस आएगा, तो शैतान को अंततः पूरी तरह से पराजित कर दिया जाएगा। प्रकाशितवाक्य 19:19-21 सिखाता है कि पशु और झूठे भविष्यवक्ता को पकड़कर आग की झील में फेंक दिया जाएगा। और 20:9-10 दर्शाता है कि अजगर को भी हरा दिया जाएगा और आग की झील में फेंक दिया जाएगा, जहाँ वह परमेश्वर के किसी भी विश्वासयोग्य लोगों को कभी कोई हानि नहीं पहुँचा पाएगा। और उसके लिए लड़नेवाली सारी दुष्ट शक्तियाँ भी उस विनाश का भाग बनेंगी।

दूसरा अंतिम श्राप शत्रु राजाओं और जातियों की हार का होगा।

कई स्थानों पर, प्रकाशितवाक्य ऐसे राजाओं और जातियों के विनाश का वर्णन करता है जो परमेश्वर के शत्रु हैं। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 6:15-17 स्पष्ट करता है कि पृथ्वी के राजा, साथ ही साथ प्रधान, धनी और सामर्थी, यह चाहेंगे कि पहाड़ उन पर आ गिरें ताकि वे मेम्ने के प्रकोप से बच सकें। यह ऐसे सभी मानवीय अधिकारियों के विरुद्ध मसीह के दंड को प्रस्तुत करता प्रतीत होता है जो उसके राज्य का विरोध करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 19:15-21 में, यीशु अपने श्वेत घोड़े पर प्रकट होता है, और स्वर्ग की सेना की अगुवाई करता है, और पृथ्वी के राजाओं को गिरा देता है ताकि वह उनके स्थान पर राज्य करे।

और प्रकाशितवाक्य 16:19 में परमेश्वर बेबीलोन को यह पिलाएगा :

> अपने क्रोध की जलजलाहट की मदिरा (प्रकाशितवाक्य 16:19)।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा, बेबीलोन उन मानवीय और प्रशासनिक शक्तियों का प्रतीक है जो मसीह के राज्य का विरोध करती हैं। और यह पद स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि इन सारी जातियों और उनके प्रधानों को अपनी अवज्ञाकारिता के कारण परमेश्वर के प्रकोप को अवश्य सहना पड़ेगा।

तीसरा अंतिम श्राप अविश्वासियों को दोषी ठहराना होगा।

मसीह के पुनरागमन पर न केवल विरोधी राजाओं और जातियों को नाश किया जाएगा, बल्कि इन जातियों का प्रत्येक अविश्वासी परमेश्वर के विरुद्ध अपने व्यक्तिगत विद्रोह के प्रत्यक्ष परिणाम के कारण परमेश्वर के अंतिम दंड को प्राप्त करेगा। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 14:17-20 में दो स्वर्गदूत पृथ्वी से सारे अविश्वासियों को इकट्ठा करते हैं और उन्हें दाख के गुच्छे के समान "परमेश्वर के प्रकोप के रसकुण्ड" में फेंक देते हैं। और प्रकाशितवाक्य 20 में जिनके नाम जीवन की पुस्तक में नहीं लिखे हैं उन सबको आग की झील में फेंक दिया जाता है।

प्रकाशितवाक्य 20:12-15 में इस विषय पर यूहन्ना के विवरण को सुनिए :

> फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गईं; और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक; और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> जैसा उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, वैसे ही उनके कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया . . . और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया (प्रकाशितवाक्य 20:12-15)।

यहाँ यूहन्ना ने सभी अविश्वासियों के भावी दंड का वर्णन किया। उनमें से प्रत्येक आग की झील में डाल दिया जाएगा ताकि वे परमेश्वर के अनंत प्रकोप को सहें क्योंकि उन्होंने उसके विरूद्ध पाप किया है।

> जब हम अपने चारों ओर के संसार के बारे में और अविश्वासी लोगों के बारे में सोचते हैं, तो हमें उनके बारे में क्या सोचना चाहिए? उनके प्रति हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? हम यह सोचने के प्रति प्रलोभित हो सकते हैं कि हम उनसे श्रेष्ठ हैं, और विशेषकर तब जब उन्होंने हमसे बुरा व्यवहार किया हो या हमारा उपहास किया हो। परंतु मेरे विचार से यीशु हमसे चाहेगा कि हममें उनकी सेवा करने, तरस खाने, उन्हें खोए हुओं के रूप में देखने का स्वभाव हो, क्योंकि हम नहीं जानते कि उनमें से कौन मन फिरा ले, और इसलिए हम सुसमाचार सुनाने के द्वारा उनकी सेवा कर सकते हैं और आशा कर सकते हैं कि वे प्रत्युत्तर देंगे। जब हम न्याय के दूसरे पहलू के बारे में सोचते हैं, तो उस समय हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? और वहाँ मेरे विचार से उनके प्रति दया और उदासी का भाव होना चाहिए। और उस बिंदु पर हम एक स्पष्ट विवेक रखना चाहेंगे कि हमने उनसे उस समय प्रेम किया था जब हमारे पास उन्हें सुसमाचार सुनाने का अवसर था और वे हम पर अपनी अँगुली उठाकर यह नहीं कह पाएँगे, "तुम जानते थे, तुमने मुझे मसीह के बारे में क्यों नहीं बताया?" इसलिए हमें उन पर पहले से ही दोष न लगाते हुए भविष्य के दृष्टिकोण के साथ उनके साथ रहना चाहिए, हमें उनकी सेवा करनी चाहिए और सहायता करनी चाहिए ताकि वे मसीह में अपना बचाव ढूँढ सकें।
>
> **— डॉ. जॉन ई. मैक्किनले**

> क्योंकि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक बहुत ही स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि अंतिम न्याय में परमेश्वर के सारे शत्रुओं को दोषी ठहराया जाएगा और उन्हें नाश किया जाएगा, इसलिए अविश्वासियों के प्रति हमारा व्यवहार आज साहस, तरसपूर्ण गवाही और दीनता का होना चाहिए। साहस इसलिए क्योंकि हम जानते हैं कि अंततः विजय मसीह ही की है। हमें अपने विरुद्ध उन अविश्वासियों द्वारा दी जानेवाली धमकियों से भयभीत नहीं होना चाहिए जो हमारे विश्वास से घृणा करते हैं और हमारे प्रभु से घृणा करते हैं। साथ ही, हममें तरस का होना आवश्यक है। हम यह स्वीकार करते हैं कि मसीह के पुनरागमन में देरी, जैसा कि हमें लगता है, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अनुसार परमेश्वर के सारे लोगों के एकत्र किए जाने के कारण है। यहाँ तक कि तुरहियों से संबंधित ईश्वरीय न्याय चेतावनी के संकेत हैं, चेतावनी की आवाज़ें हैं, जो लोगों को मन फिराने के लिए बुलाते हैं। निस्संदेह वे सुसमाचार के द्वारा मन फिराते हैं, और इसलिए हमें गवाही देनी जरुरी है। हममें दीनता की भी आवश्यकता है, क्योंकि यह तकाज़ा कि परमेश्वर के विरूद्ध विद्रोह अंत में दंड लेकर आएगा, हमें यह याद दिलाता है कि हम स्वयं किस योग्य हैं। हम उनसे श्रेष्ठ नहीं हैं जो आज अविश्वासी हैं। एक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> समय था जब हम शत्रु थे और परमेश्वर हमें अनुग्रह के द्वारा विश्वास से यीशु के साथ संबंध में ले आया है।
>
> — डॉ. डेनिस ई. जॉनसन

अंतिम न्याय के श्राप चाहे जितने भी भयानक लगते हों, हमें यह याद रखना है कि वे श्राप पूर्णतया न्यायसंगत हैं। अविश्वासियों को दंड दिया जाएगा क्योंकि वे अपनी अवज्ञाकारिता के कारण दंड के योग्य हैं। परमेश्वर अपनी सृष्टि के ऊपर राजा है, और उसकी अवज्ञा करने का अर्थ है उसके विरुद्ध पाप और विद्रोह करना। और यह मानने में चाहे जितना भी पीड़ादायक हो, परमेश्वर का न्याय मांग करता है कि पाप और विद्रोह को दंडित किया जाए। इस भाव में, दुष्ट को दंड देना परमेश्वर के धर्मी राजत्व का एक प्रमुख पहलू है।

अब जबकि हमने देख लिया है कि अंतिम श्रापों में कैसे पाप और अविश्वासयोग्यता के परिणाम उंडेले जाते हैं, इसलिए आइए हम उन अंतिम आशीषों के परिणामों को देखें जो नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों को दी जाएँगी।

अंतिम आशीषें

पाप के विरुद्ध परमेश्वर के अंतिम न्याय में उन सारी आत्मिक और प्रशासनिक शक्तियों को इस संसार से मिटा दिया जाएगा जिन्होंने उसके राज्य का विरोध किया था, और उनके साथ सभी अविश्वासियों को दंडित किया जाएगा। और जब सृष्टि परमेश्वर के शत्रुओं से शुद्ध हो जाएगी, तो पूरा ब्रह्मांड भी नया हो जाएगा, जिसके फलस्वरूप परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोगों के लिए नया स्वर्ग और नई पृथ्वी उत्पन्न होगी जिसमें वे अनंतकाल तक आनंद मनाएँगे।

प्रकाशितवाक्य 21:1-5 नई सृष्टि का वर्णन ऐसे करता है :

> फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी . . . फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊँचे शब्द से यह कहते हुए सुना, “. . . पहली बातें जाती रहीं।” जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, “देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूँ।” (प्रकाशितवाक्य 21:1-5)

हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की तीन अंतिम आशीषों का उल्लेख करेंगे, जिनके बारे में यूहन्ना ने कहा था कि वे उन लोगों के लिए होंगी जो परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहे हैं। पहली, सृष्टि का एक संपूर्ण नवीनीकरण या सुधार होगा।

सृष्टि का नवीनीकरण

प्रकाशितवाक्य 21:1, 4 पहले स्वर्ग और पहली पृथ्वी के जाते रहने के बारे में बात करता है, जो यह दर्शाता है कि एक भाव में उनका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। हम 2 पतरस 3:10-11 जैसे स्थानों में ऐसे ही विचारों को पाते हैं, जो वर्तमान संसार के नाश होने के बारे में बात करते हैं ताकि नए संसार के लिए मार्ग तैयार हो सके।

परंतु प्रकाशितवाक्य 21:5 नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का वर्णन नवीनीकरण के रूप में करता है, जो यह दर्शाता है कि पूरी तरह से मिट जाने की अपेक्षा, पुरानी सृष्टि को सुधारा या नया किया जाएगा। यही विचार

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

रोमियों 8:19-22 जैसे अनुच्छेदों में भी पाया जाता है। ये अनुच्छेद सिखाते हैं कि दोनों सृष्टियों के बीच केवल समरूपता ही नहीं, बल्कि काफी निरंतरता भी होगी। प्रकाशितवाक्य 21:24-26 तो यह भी कहता है कि जातियों की महिमा और वैभव को नए यरूशलेम में लाया जाएगा, जो यह सुझाव देता है कि हमारे वर्तमान जीवनों के छुटकारे के पहलू नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में लाए जाएँगे।

फलस्वरूप, अधिकांश धर्मविज्ञानी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि वर्तमान सृष्टि को पूरी तरह से हटाया और बदला नहीं जाएगा। इसकी अपेक्षा, यह मौलिक रूप से रूपांतरित हो जाएगी।

> हम प्रकाशितवाक्य में देखते हैं कि नए यरूशलेम में निश्चित रूप से ऐसे तत्व हैं जो ऐसी तस्वीरों को दर्शाते और यहाँ तक कि उनके सदृश्य प्रतीत होते हैं जिन्हें हम उत्पति 2 और 3 में सृष्टि के आरंभ में देखते हैं, जैसे कि जीवन का वृक्ष। और इसलिए हमें अपने आप से यह पूछना है, यह किसे प्रस्तुत करता है? इसकी व्याख्या करने के शायद विभिन्न तरीके हैं, परंतु मैं सोचता हूँ कि इन बातों को सतही रूप से पढ़ने पर यह पता चलता है कि नए नियम में ऐसे तत्व होंगे जो वास्तव में सृष्टि के साथ बहुत अच्छे तरीके मेल से खाएँगे जब इसे मूल रूप से पेश किया गया था और आगे रखा गया था। अतः एक भाव में नए युग के साथ क्षितिज पर एक परिवर्तन होने वाला है, परंतु यह संपूर्ण परिवर्तन नहीं होगा। उस सृष्टि के ऐसे अवशेष होंगे जिन पर परमेश्वर ने मूल रूप से कार्य किया था, और वे अब भी सक्रिय रूप से अपना कार्य कर रहे हैं। इसलिए हम वास्तव में एक वास्तविकता को दूसरी में परिवर्तित होते हुए नहीं देखते हैं, परंतु इसकी अपेक्षा हम शायद वर्तमान वास्तविकता के एक परिवर्तन को — एक तरह के बदलाव को — इस नई वास्तविकता में देखते हैं। और जीवन के वृक्ष जैसे रूपक और प्रतीक दोनों वास्तविकताओं के बीच की निरंतरता को दर्शाने में सहायता करते हैं।
>
> **— श्री ब्रैडले टी. जॉनसन**

यह परिवर्तन एक संपूर्ण नवीनीकरण होगा, जो इस संसार को उससे भी बेहतर बना देगा जब इसे पहले-पहल रचा गया था। संपूर्ण सृष्टि पवित्र और शुद्ध होगी, अर्थात् परमेश्वर के निवास के लिए पूरी तरह से उपयुक्त होगी।

जैसे कि स्वर्गदूत ने प्रकाशितवाक्य 21:3-4 में घोषणा की :

> परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा। वह उनकी आँखों से सब आँसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं (प्रकाशितवाक्य 21:3-4)।

सृष्टि के नवीनीकरण के एक और महत्वपूर्ण पहलू का उल्लेख प्रकाशितवाक्य 22:3 में किया गया है, जहाँ हमें यह बताया गया है :

> फिर श्राप न होगा (प्रकाशितवाक्य 22:3)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर उस श्राप का अंत हो जाएगा जो परमेश्वर ने अदन की वाटिका में आदम और हव्वा पर पर डाला था। उत्पति 3:17-19, 5:29 और 8:21 जैसे अनुच्छेद स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान स्वर्ग और पृथ्वी पूरी तरह से श्रापित है और मनुष्यजाति के पाप में पतन के कारण भ्रष्ट हो गई है। धरती भोजन उत्पन्न करने के हमारे प्रयासों का विरोध करती है। जंगली जानवर हमारे विरुद्ध हिंसक व्यवहार करते हैं। बाढ़, भूकंप और तूफान जैसी प्राकृतिक आपदाएँ सारे संसार में लोगों पर कष्ट लाती हैं। और सूक्ष्म जीव बीमारियों और यहाँ तक कि मृत्यु का कारण बनते हैं।

परंतु जब मसीह वापस आएगा, तो वह संसार को इस श्राप के सारे पहलुओं से छुड़ाएगा। यूहन्ना ने नवीनीकृत सृष्टि की आशीषों का वर्णन विभिन्न तरीकों से किया है, जैसे कि पवित्र शहर, नया यरूशलेम, जो यीशु की दुल्हन की तरह श्रृंगार किए है और परमेश्वर की महिमा के साथ चमक रहा है। और इस संदर्भ में यूहन्ना के द्वारा प्रयोग किया गया एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीक जीवन की नदी की वह तस्वीर थी जो नए यरूशलेम से होकर बहती है और जीवन के वृक्ष को सींचती है।

सुनिए प्रकाशितवाक्य 22:1-2 में उसने क्या लिखा :

> फिर उसने मुझे बिल्लौर की सी झलकती हुई, जीवन के जल की नदी दिखाई, जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर उस नगर की सड़क के बीचों बीच बहती थी। नदी के इस पार और उस पार जीवन का वृक्ष था; उसमें बारह प्रकार के फल लगते थे, और वह हर महीने फलता था; और उस वृक्ष के पत्तों से जाति-जाति के लोग चंगे होते थे (प्रकाशितवाक्य 22:1-2)।

ये सुंदर पद परमेश्वर के सिंहासन से निकलती हुई एक नदी को चित्रित करते हैं जो जीवन के वृक्ष को सींचती है, जिससे जाति-जाति के लोग चंगे होते हैं। ये विषय उत्पति की पुस्तक की बातों को दर्शाते हैं। उत्पति 2:10 एक नदी के बारे में बात करता है जो अदन से बहती थी और अदन की वाटिका और जीवन के वृक्ष को सींचती थी। भजन 36:8 में इस नदी को सुख की नदी के रूप में, और भजन 46:4 में एक ऐसी नदी के रूप में स्मरण किया गया है, जिसकी नहरों से परमेश्वर के नगर में आनंद होता है।

और इस नदी के विषय में विस्तृत चर्चा यहेजकेल 47:1-12 में पाई जाती है। यहेजकेल के दर्शन में, मंदिर में से जल की एक धारा निकली और वह इतनी बड़ी नदी में परिवर्तित हो गई जिसे पार नहीं किया जा सकता था। वह जल जहाँ कहीं भी गया वहाँ वह जीवन लेकर आया, और उसने खारे मृत सागर तक को ताज़े जल में परिवर्तित कर दिया।

सुनिए योएल 3:17-18 में परमेश्वर ने इस नदी के बारे में क्या कहा है :

> इस प्रकार तुम जानोगे कि यहोवा जो अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर वास किए रहता है, वही हमारा परमेश्वर है। यरूशलेम पवित्र ठहरेगा, और परदेशी उस में होकर फिर न जाने पाएँगे। उस समय पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा, और टीलों से दूध बहने लगेगा, और यहूदा देश के सब नाले जल से भर जाएँगे; और यहोवा के भवन में से एक सोता फूट निकलेगा, जिससे शित्तीम की घाटी सींची जाएगी (योएल 3:17-18)।

प्रकाशितवाक्य 22 में जीवन की यह नदी और भी बड़ी हो जाती है। यह परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलती हुई, नए यरूशलेम के एकदम बीच में से बहती है, जो यह दर्शाती है कि सारे जीवन और चंगाई का स्रोत स्वयं परमेश्वर है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

यूहन्ना के दर्शन में, जीवन का यह भरपूर स्रोत जीवन के वृक्ष को सींचता है जो नदी के दोनों ओर खड़ा है। वृक्ष भरपूर फल उत्पन्न करता है जो इतने प्रभावशाली हैं कि उसके पत्तों तक का प्रयोग जाति-जाति के लोगों की चंगाई के लिए किया जा सकता है।

> जैसा कि हम नए यरूशलेम के बारे में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंत में पढ़ते हैं, तो हम कई ऐसे तत्वों को देखते हैं जो उत्पति के विवरण और अदन की वाटिका की याद दिलाते हैं, और इसका एक कारण है, और वह यह है, कि वास्तव में, नया यरूशलेम सृष्टि की वैसी पुनर्स्थापना है जैसी इसके लिए सोची गई थी। और इसलिए हम परमेश्वर को मनुष्य की रचना करते हुए और उसे एक सिद्ध स्थान में रखते हुए देखते हैं। और यह सच है कि वाटिका में उन्हें परिपक्व होने और शायद पूर्ण महिमामय स्तर तक पहुँचने के उद्देश्य से रखा गया था जो कि बाद में, निस्संदेह भटक गया जब उन्होंने परमेश्वर के उद्देश्य को ठुकरा दिया और उससे फिर गए। परंतु वास्तव में, अदन में हम देखते हैं कि परमेश्वर का उद्देश्य क्या है, अर्थात् वह मनुष्यों से क्या चाहता है, और इसलिए हम नए यरूशलेम में मनुष्यों और परमेश्वर के बीच ऐसे सिद्ध संबंध की पुनर्स्थापना को देखने की आशा करते है जिसके लिए हम रचे गए थे।

— डॉ. मार्क एल. स्ट्रॉस

> जब हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को देखते हैं तो हम नए यरूशलेम के चित्रण को देखते हैं। हम पाते हैं कि इसमें अदन की वाटिका के कई तत्व हैं, जैसे कि जीवन का वृक्ष। यह बाइबल की पहली पुस्तक से लेकर बाइबल की अंतिम पुस्तक तक क्यों है? मेरे विचार से आंशिक रूप से यह इस बात को दर्शाता है कि यहाँ उस विनाश को पूरी तरह से पलट दिया गया है जो पाप के द्वारा आया था और इस बात को भी कि परमेश्वर ने सब कुछ सही कर दिया है। पाप ने उसका नाश नहीं किया जो उसने चाहा था, और उसने न केवल इसे वैसा ही कर दिया जैसा यह आरंभ में था, बल्कि इसने उसे सिद्ध कर दिया है। यह वैसी सृष्टि नहीं है जिसका फिर से पतन हो जाए, यह ऐसी सृष्टि है जो सदा तक बनी रहेगी।

— डॉ. जॉन ई. मैक्किनले

जब आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में पाप किया, तो परमेश्वर ने उन्हें श्रापित किया और उन्हें अदन की वाटिका से निकाल दिया, विशेषकर इसलिए कि वे जीवन के वृक्ष से फल न खाएँ और सदा तक जीवित न रहें। परंतु जब मसीह वापस आएगा, तो जीवन की नदी फिर से जीवन के वृक्ष को सींचेगी, और सारी जातियाँ इस फल तक पहुँचेंगी। छुटकारा-प्राप्त संपूर्ण मनुष्यजाति चंगाई प्राप्त करेगी। वहाँ फिर कोई पाप, बीमारी, या रोग नहीं होगा। प्राकृतिक आपदाएँ फिर कभी न होंगी। सभी राष्ट्र धार्मिकता और शांति के साथ कार्य करेंगे। और परमेश्वर की सारी सृष्टि उसकी महिमा को पूर्ण रूप से प्रकट करेगी।

दूसरी अंतिम आशीष जो परमेश्वर के विश्वासयोग्य लोग नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर प्राप्त करेंगे, वह यह है कि पूरा संसार परमेश्वर की उपस्थिति का विश्वव्यापी मंदिर होगा।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

विश्वव्यापी मंदिर

पूरे पुराने नियम में, परमेश्वर ने पवित्र स्थानों को अलग किया जहाँ उसने अपनी उपस्थिति को विशेष रूप में प्रकट किया। उत्पति 3:8 दर्शाता है कि वह अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के साथ चला-फिरा। और पवित्रशास्त्र के अन्य अनुच्छेद दर्शाते हैं कि ऐसा इसलिए था क्योंकि वाटिका उसका पवित्र स्थान या मंदिर था।

उदाहरण के लिए, उत्पति 2:15 कहता है कि आदम को बाग में कार्य करने और उसकी रक्षा करने लिए रखा गया था। इस पद में "कार्य" के लिए इब्रानी शब्द *आवाद* है। और "रक्षा" के लिए शब्द *शामार* है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि गिनती 3:8 में मूसा ने इन्हीं शब्दों का प्रयोग उन याजकों के कार्य का वर्णन करने के लिए किया जो मंदिर में सेवा करते थे। दूसरे शब्दों में, आदम और हव्वा ने अदन की वाटिका में याजकीय कार्य किया, और यह दर्शाता है कि अदन परमेश्वर का पृथ्वी पर का पवित्र स्थान था।

इससे बढ़कर, यहेजकेल 47:7 के युगांत-संबंधी मंदिर की नदी और उसके वृक्ष अदन की वाटिका की नदी, और जीवन के वृक्ष के बहुत सदृश्य हैं, जिनका वर्णन उत्पति 2:9-10 में किया गया है।

और जब यहेजकेल 28:13-14 अदन को "परमेश्वर के पर्वत" के रूप में दर्शाता है, तो यह उसी शब्दावली का प्रयोग करता है जिसका प्रयोग प्राचीन संसार में ऐसे पर्वतों के लिए किया जाता था जिन पर मंदिर बनाए जाते थे।

अदन की वाटिका के द्वारा उसके पृथ्वी पर के पवित्र स्थान के रूप में कार्य कर लेने के बाद, परमेश्वर ने अपनी विशेष उपस्थिति को मिलाप वाले तम्बू में भी प्रकट किया। इसके बारे में हम निर्गमन 40:34-38 में पढ़ते हैं।

मिलाप वाले तम्बू के बाद, परमेश्वर ने अपनी विशेष उपस्थिति को मंदिर में प्रकट करना शुरू किया, जैसे कि हम 1 राजाओं 8:10-11, और 2 इतिहास 7:1-3 जैसे अनुच्छेदों में पढ़ते हैं।

इब्रानियों 8:5 स्पष्ट करता है कि पृथ्वी पर के इन पवित्र स्थानों का उद्देश्य वास्तव में परमेश्वर के स्वर्गीय सिंहासन कक्ष के सदृश्य बनना था, जहाँ उसकी विशेष उपस्थिति सदैव स्पष्ट रूप से प्रकट होती है। परंतु नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर परमेश्वर की उपस्थिति किसी वाटिका या भवन जैसे छोटे से स्थान तक सीमित नहीं होगी। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर अपनी विशेष उपस्थिति को पूरे संसार में प्रकट करेगा।

सुनिए कैसे यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 21:22-23 में नए यरूशलेम का वर्णन किया है :

> मैं ने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्‍वर और मेम्ना उसका मन्दिर है। उस नगर में सूर्य और चाँद के उजियाले की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्‍वर के तेज से उस में उजियाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है (प्रकाशितवाक्य 21:22-23)।

प्रकाशितवाक्य ऐसे समय की अपेक्षा करता है जब नए यरूशलेम में मंदिर की आवश्यकता ही नहीं होगी। इसकी अपेक्षा, परमेश्वर अपनी विशेष उपस्थिति को हर जगह प्रकट करेगा। वह अपने लोगों के बीच वास करने के द्वारा उन्हें आशीष देगा, और जाति-जाति के लोग उसकी ज्योति में चलेंगे। जब वह समय आएगा, तो परमेश्वर की महिमा इस संसार को वैसे पूरी तरह से भरेगी जैसे सूर्य अब दिन के समय प्रकाश देता है।

जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 21:3 में पढ़ते हैं :

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है। वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा और उनका परमेश्वर होगा (प्रकाशितवाक्य 21:3)।

नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर परमेश्वर की विशेष उपस्थिति पूरे संसार में उसके सब लोगों के साथ होगी।

यीशु मसीह के कार्य के कारण संसार का नवीनीकरण इस विश्वव्यापी मंदिर की रचना करेगा। प्रकाशितवाक्य 1 में यीशु स्वर्गीय सिंहासन कक्ष में सात दीवटों के बीच में चला-फिरा, जो उसकी कलीसियाओं में परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है। परंतु जब मसीह वापस आएगा, तो वह अपने विशेष राज्य को पूरी सृष्टि में स्थापित करेगा, जिससे पूरा संसार परमेश्वर का मंदिर बन जाएगा, और उसकी विशेष उपस्थिति प्रत्येक स्थान पर प्रकट होगी।

यूहन्ना द्वारा उल्लिखित तीसरी आशीष यह है कि परमेश्वर राजा के रूप में यीशु मसीह के पृथ्वी के अनंत राज्य को स्थापित करेगा।

अनंत राज्य

प्रकाशितवाक्य 21 और 22 दर्शाते हैं कि नई पृथ्वी का केंद्र, अर्थात् नया यरूशलेम उसकी राजधानी होगा। और नगर का केंद्र परमेश्वर का सिंहासन होगा। परमेश्वर का सिंहासन राजा के रूप में उसके शासन को दर्शाता है। और जब यीशु वापस आएगा, तो नए यरूशलेम में उसका राज्यभिषेक होगा, और वह अपने पिता के स्थान पर पूरे संसार पर शासन करेगा।

1 इतिहास 29:23 दर्शाता है कि सभी दाऊदवंशी राजाओं ने यरूशलेम में परमेश्वर के सिंहासन पर बैठने के सम्मान को प्राप्त किया था। परंतु केवल अंतिम दाऊदवंशी राजा, अर्थात् यीशु मसीह, ही नए यरूशलेम में सिंहासन पर बैठेगा, और केवल उसी के राज्य का कभी अंत नहीं होगा। छुड़ाए गए सब लोग नई सृष्टि में उसके साथ रहेंगे, और वे उसके अधिकार और सामर्थ्य को स्वीकार करेंगे, उसके सिंहासन के सामने आज्ञाकारिता में झुकेंगे, उसे सम्मान और महिमा देंगे, और जैसे कि हम प्रकाशितवाक्य 22:5 में पढ़ते हैं, उसके अनंत राज्य के भागीदार भी बनेंगे।

> कुछ लोग 70 वर्ष तक जीवन जीते हैं, और कुछ 80, 90 और 100 वर्ष तक, और फिर वे मर जाते हैं। इस नई पृथ्वी पर ऐसा नहीं होगा। हम इस पृथ्वी पर अनंतकाल तक जीएँगे। क्यों? क्योंकि प्रभु यीशु मसीह हर समय हमारे साथ होगा। आप कहेंगे, अच्छा, उसे तो स्वर्ग में होना चाहिए। नहीं। वह स्वर्ग और पृथ्वी का प्रभु है। वह इस पृथ्वी पर अनंतकाल तक मनुष्य के पुत्र के रूप में होगा। और अब इससे अधिक आपको क्या चाहिए? यीशु के साथ अनंतकाल तक रहना या उसके बिना रहना? और इसलिए, मैं तो यही कहूँगा कि मैं इस नई पृथ्वी पर प्रभु यीशु मसीह के साथ हमेशा-हमेशा तक रहने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
>
> **— डॉ. साइमन जे. किस्टेमेकर**

नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर मसीह का राज्य पूर्णतया सिद्ध होगा। वह अपने लोगों की हर एक आवश्यकता को पूरा करेगा। वहाँ कोई पाप, कोई भ्रष्टता, कोई बीमारी, या कोई मृत्यु नहीं होगी। हमारे आनंद में कोई कमी नहीं होगी। परमेश्वर की वाचा की प्रत्येक आशीष हमेशा के लिए हमारी होगी।

विश्वासी होने के रूप में हमारी यह चाहत होनी चाहिए कि मसीह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर हम पर राज्य करे। और हमें यह जानते हुए इस समय उसके प्रति विश्वासयोग्यता के साथ रहना चाहिए — परीक्षा में पड़ने और सताए जाने के समय में भी — कि जब हम विश्वासयोग्यता में स्थिर रहते हैं तो हम उन महानतम आशीषों के भागीदार बनेंगे जो परमेश्वर ने अपनी सृष्टि के लिए रखी हैं।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने राजा और उसके राज्य के विषयों पर ध्यान देने के द्वारा प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की समीक्षा की है। हमने राजत्व की अवधारणा की जांच की है, परमेश्वर की राजकीय कृपा की खोज की है, राजा के प्रति मानवीय विश्वासयोग्यता के महत्व पर ध्यान दिया है, और विश्वासयोग्यता के लिए आशीषों और अविश्वासयोग्यता के लिए श्रापों के परिणामों का वर्णन किया है।

सारे मसीहियों की आशा यह है कि एक दिन हमारा राजा वापस आएगा। यह आशा हमें उस प्रत्येक क्लेश को सहने और उस पर विजय पाने के लिए प्रेरित करती है जिसका सामना हम जीवन में करते हैं। अपने विश्वास के कारण हम चाहे कैसी भी कठिनाई का सामना करें, फिर भी हमारे पास परमेश्वर और उसके मसीह के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता को प्रदर्शित करने का हर कारण है क्योंकि हम जानते हैं कि उसका वचन सच्चा है। यीशु हम पर राज्य करने और हमें प्रतिफल देने वापस आएगा। और जब तक ऐसा नहीं होता, हम उस प्रतिज्ञा पर भरोसा करते हैं जो उसने हमें प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंत में दी है : "हाँ, मैं शीघ्र आने वाला हूँ।" और हमारा प्रत्युत्तर भी वही है जो यूहन्ना का है : "आमीन। हे प्रभु यीशु आ!"

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।